मासिक

अरफात किरण

रायबरेली

इस्लाम सम्पूर्ण मुजाहिदा

इस्लाम मुकम्मल जिहाद व मुजाहिदा है लेकिन तन्हाई में बैठकर नहीं बल्कि मैदान में निकल कर। रसूलुल्लाह स०अ० की ज़िन्दगी तुम्हारे सामने है। सहाबा रज़ि० की ज़िन्दगी तुम्हारे सामने है। वही तुम्हारे लिये नमूना है और इसी में तुम्हारी नजात है और वही तुम्हारी भलाई का द्वार है और वही तुम्हारी उन्नति व नेकी का मार्ग है। मुहम्मद स०अ० का संदेश गौतम बुद्ध के संदेश की तरह इच्छाओं को छोड़ देने वाला नहीं बल्कि इच्छा पूर्ति है। मुहम्मद स०अ० का पैग़ाम हज़रत मसीह अलै० के पैग़ाम की तरह दौलत व ताक़त की मनाही नहीं बल्कि उनको पाने और ख़र्च करने के तरीक़े की दुरुस्तगी और उसके सही इस्तेमाल व ख़र्च को तय करना है।

ईमान और उसके मुताबिक़ अमल यही इस्लाम है। इस्लाम अमल है, अमल को छोड़ने का नाम नहीं। वाजिब चीज़ों को अदा करने का नाम है वाजिब चीज़ों को छोड़ देने का नाम नहीं, फ़र्ज़ को अदा करना है, फ़र्ज़ को छोड़ देना नहीं। इस अमल और उन वाजिबात और फ़राएज़ की व्याख्या तुम्हारे पैग़म्बर स०अ० और उनके यारों की जिन्दगियों व सूरतों में मिलेगी।

मौलाना सैय्यद सुलेमान नदवी रह०

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

अगर मानवता न हो तो संसार का क्या मूल्य है

वो मानवता जो दुनिया में पनप रही है, फल–फूल रही है, गुल खिला रही है, शाहकार बना रही है, किताबों के ढेर लगा रही है, पुस्तकालय भर रही है और अब भी उसके अन्दर ज़हानत का ख़ज़ाना है, अब भी उसके अन्दर मेहनत का ख़ज़ाना है, अब भी उसके अन्दर गुल का खिलाना है, ये इन्सान जिससे दुनिया की बहार है अगर इन्सान न हो तो दुनिया की क्या क़ीमत है। इन्सान ही से इसकी बहार है। इन्सान ही से इसकी रौनक़ क़ायम है। इन्सान ही से इसकी चमक–दमक बरक़रार है। चले जाइये आप क़ब्रिस्तान में तो क्या वहां आपका दिल लगेगा। चले जाइये म्यूज़ियम में तो क्या वहां रहने को दिल चाहेगा। कैसे–कैसे जानवर हैं, कैसे–कैसे पुतले हैं लेकिन वहां आप ठहर नहीं सकते, देखेंगे और चले आयेंगे। लेकिन इन्सान की बस्ती से इन्सान नहीं घबराता। जंगल से गुज़रता है तो डरता हुआ ख़ुदा से दुआ करता है कि ख़ैरियत से गुज़र जाये और इन्सानों के पास सही सलामत पहुंच जाये। अगर इन्सान को इन्सान से मुहब्बत न हो, इन्सान को इन्सान के दुख–दर्द का एहसास न हो, इन्सान इन्सान पर तरस न खाये, इन्सान इन्सान से हमदर्दी न करे तो वो इन्सान नहीं भेड़िया है और कौन है जो भेड़िये की तारीफ़ करता है और कौन है जो भेड़िये से नफ़रत नहीं करता और कौन है जिसका भेड़िये की बुराई से दिल नहीं दुखता। इतनी बड़ी भीड़ में है कोई शख़्स जो ये कहे कि आप भेड़िये की बुराई क्यों कर रहे हैं लेकिन जब इन्सान भेड़िया बन जाये तो क्यों आपका दिल नहीं दुखता। क्यों आपके दिल पर चोट नहीं लगती। इसके नाम से नफ़रत का इज़हार क्यों नहीं होता। क्या इन्सान भेड़िया बनने के लिये बनाया गया है? इन्सान तो फ़रिश्ता बनने के लिये बनाया गया है। इन्सान तो वली बनने के लिये बनाया गया है। इन्सान तो हमदर्द मख़लूक बनने के लिये बनाया गया है और इसे सर्वश्रेष्ठ प्राणी का और हमारी शायरी, हमारी बोलचाल, हमारे एहसास और हमारी महफ़िलों में हम इसकी इसी हैसियत से चर्चा करते हैं।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

नवम्बर २०१३ ई०

अंक:११ वर्ष:७

الإمام أبي الحسن الندوی

संरक्षक

हज़रत मौलाना सैय्यद
मुहम्मद राबे हसनी नदवी
अध्यक्ष – दारे अरफ़ात

निरीक्षक

मो० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
मुफ्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

प्रति अंक–10रू वार्षिक–100रू
सम्मानीय सदस्यता–500रू वार्षिक

www.abulhasanalinadwi.org
FAX-0535-2211386
E-Mail: markazulimam@gmail.com

इस अंक में:

फ़िरऔन की वापसी २
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मुहर्रम का महीना और आशूरा की हक़ीक़त ४
मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी

मिस्र तेरे हाल पे रोना आया ७
मौलाना मुहम्मद अलाउद्दीन नदवी

मुसलमानों से आबाद भारतीय जेलें ९
जनाब असदुर्रहमान तीमी

इमाम अबू हनीफ़ा रह० की शान ११
ख़्वाजा कलीमुद्दीन असअदी

रसायनिक हथियार १२

लम्हों ने ख़ता की सदियों ने सज़ा पायी १३
मौलाना शमसुल हक़ नदवी

मुज़फ़्फ़रनगर दंगे आंखों देखा हाल १५
मुहम्मद अलमुत्लाह इस्लाही

अवैध संबंध की बर्बादियां १८
मुफ़्ती मुहम्मद ज़करिया क़ासमी

आत्महत्या–इस्लामिक दृष्टिकोण से २०

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

फ़िरऔन की वापसी

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

फ़िरऔर यानि घमण्ड, अत्याचार व बरबरियत का सम्पूर्ण रूप। ताक़त व सत्ता के नशे मे चूर। जिसको चाहा सूली पर लटका दिया। जिसकी चाही उसकी इज़्ज़त लूट ली। खुद को मौत व ज़िन्दगी का मालिक समझने वाला। दबी–कुचली जनता पर अत्याचार करके खुदाई का दावा करने वाला। अपनी मौत व अपने अन्जाम से ग़ाफ़िल। "मैं रब हूं" का ऐलान करने वाला। अपने तख़्त व ताज से दूर समन्दर की गहराई में मौत के फ़रिश्ते के शिकंजे में ऐसा जकड़ा कि क़यामत तक पूरी दुनिया के लिये इबरत की मिसाल बन गया।

फ़िरऔन तो मर चुका लेकिन फ़िरऔनियत हर दौर में ज़िन्दा रही। चेहरे बदलती रही और नये–नये रूप धारण करती रही। ये फ़िरऔनियत कभी तातारियों के फ़ित्ने के साथ पनपती रही। कभी कम्यूनिज़्म की शक्ल अपनाती रही और कभी समाजवाद की सूरत अपनाती रही। अब ये फ़िरऔनियत "संसार में शांति स्थापना" के आकर्षित नाम से दुनिया के सामने है। इसी फ़िरऔनियत ने इराक़ की चूलें हिला दीं। अफ़ग़ानिस्तान को बर्बाद कर दिया। सीरिया को गृहयुद्ध की आग में ढ़केल दिया। म्यांमार में ख़ून की नदियां बहा दी और मुज़फ़्फ़रनगर के मासूमों को उनके घरों से निकाल कर कैम्पों में जीवन व्यतीत करने और ख़ैरात के टुकड़ों पर जीने को मजबूर कर दिया। और अब मिस्र से निकलने वाली ये फ़िरऔनियत एक बार फिर मिस्र को अपनी पकड़ में लिये हुए है।

मिस्र की धरती ने बहुत से फ़िरऔनों को देखा है और हर फ़िरऔन के ज़ुल्म व सितम को बर्दाश्त किया है। इस धरती पर दोबारा फ़िरऔन की वापसी जनरल सीसी की शक्ल में हो चुकी है। इसके सिपाही वर्दियों में लिपटे, सरों पर अत्याचार की कैप लगाये टैंकों पर सवार हैं। ये सेना मिस्र के सभी हिस्सों में कार्यरत है। यहां तक कि कारख़ानों और व्यापार पर भी इसका क़ब्ज़ा है। और स्वयं यहां की सेना अमरीका व इस्राईल के अधीन है।

यहां की धरती ने बहुत से फ़िरऔनों को देखा है लेकिन अत्याचार का तरीक़ा हमेशा एक ही रहा। बहता हुआ ख़ून, तड़पती हुई लाशें, लुटी हुई इज़्ज़तें, बिलकते हुए बच्चे, चीख़ व पुकार, सिसकियां व आहें, दम तोड़ती व सिसकती हुई इन्सानियत।

मिस्र की जनता आज फ़िरऔनियत के सामने सीना ताने है। उनकी आवाज़ में जोश भी है और गरज भी। उनके बाज़ूओं में फ़ौलाद भी है और सीनों में हौसला भी लेकिन ये फ़िरऔनियत आज धर्मनिरपेक्षता के रंग–ढ़ंग मे है। मुसलमानों के रंग व रूप में है। यहां इस्लाम और तागूत की कशमकश सीधे नहीं है, यहां गोलियां चलाने वाले हाथ भी मुसलमानों के है और छलनी होने वाले सीने भी उन्हीं के हैं। यहां की जनता दो धारे में बट चुकी है। एक इस्लाम पसंद तो दूसरी धर्मनिरपेक्ष। मिस्री जनता को खुद आमने–सामने कर दिया गया है। और फ़िरऔनी पॉलिसी के "लड़ाओ और राज करो" पूरी तरह सफल होता नज़र आ रहा है।

त्यूनिस से उठने वाली क्रान्ति की आंधी लीबिया और यमन को रौंदती हुई मिस्र तक पहुंची और उसने हुस्नी मुबारक को सत्ता से उखाड़ फेंका और फिर लम्बे अर्से बाद इख़्वानुल मुसलिमीन सत्ता में आये और मुहम्मद मुर्सी मिस्र के राष्ट्रपति चुने गये। लेकिन फ़िरऔनी ताक़त अपने उद्देश्य व अपने कार्य में लगी रहीं और साज़िशों के बाद मुर्सी को राष्ट्रपति के पद से हटा दिया गया और फ़िरऔनी प्रतिनिधी जनरल सीसी को मिस्री जनता पर मुसल्लत कर दिया गया। जनरल सीसी ने

ताक़त के नशे में धुत होकर खुद को "रब्ब–ए–आला" भी साबित करने की कोशिश की और कुरआनी तर्ज़ पर आयत गढ़ने की शर्मनाक कोशिश भी की। जिससे उसकी फ़िरऔनियत पर मुहर लग गयी। इख़्वानुल मुसलिमीन एक इस्लाम पसंद और इस्लामी मूल्यों की रक्षक जमाअत है। और इख़्वान की इस मुस्लिम पसंदी से फ़िरऔनी ताक़ते बिलकुल राज़ी नहीं है। इसी लिये क़ानूनी तौर पर चुने गये राष्ट्रपति को पदच्युत कर दिया गया। इख़्वानियों पर जुल्म किया गया। उनके नेताओं को जेलों में डाल दिया गया और इख़्वानुल मुसलिमीन का राजनीतिक लासेंस समाप्त करने का प्रयास शुरू कर दिया गया है।

मिस्र में इख़्वानुल मुसलिमीन का शासन जनता के मत से स्थापित हुआ था। मिस्रियों ने इख़्वान को वोट दिया था और ये अधिकार किसी को नहीं पहुंचता कि जनता की चुनी हुई सरकार को बेदख़ल करने की कोशिश की जाये। जबकि मिस्री सदर मुहम्मद मुर्सी ने शासन में आने के बाद ईसाईयों और दूसरे वर्गों से बेहतर संबंध के प्रयास किया। मुर्सी का बनाया हुआ संविधान इन्टरनेट पर उपलब्ध है जिसमें ऐसी कोई धारा नहीं जो मिस्र को कोई कट्टर इस्लामी राष्ट्र बनाती हो। कट्टरपंथी सलफ़ियों की ओर से ये मांग की गयी थी कि ईसाईयों पर जिज़्या लगाया जाये लेकिन मुर्सी ने उसे नकार दिया और ईसाईयों को न केवल समान नागरिक घोषित किया बल्कि एक ईसाई उपराष्ट्रपति भी अपने साथ रखा। मिस्र में न इस्लामी सज़ाए लागू की गयीं और न किसी वर्ग के इस्लामीकरण का प्रयास किया गया। लेकिन इसके बावजूद मुर्सी के शासन के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया गया। इख़्वानी शासकों को गिरफ़्तार कर लिया गया और उसके सहयोगियों पर बेझिझक गोलियां चलायीं गयीं। मुर्सी शासन को सत्ता से खींच लिया गया और हुस्नी मुबारक जैसे वक़्त के फ़िरऔन को जेल से बाहर निकालकर, "नज़रबन्दी" के नाम पर सिक्योरिटी दे दी गयी।

ये मिस्र की उन रूहों पर भी जुल्म है जो हुस्नी मुबारक की फ़िरऔनियत के सामने खड़ी हो गयीं थीं और अपनी जानें इस उम्मीद में कुर्बान कर दीं थीं आने वाला समय उनकी नस्लों को स्वतन्त्र देश में सांस लेने का अधिकार देगा। लेकिन आज उनकी कुर्बानियां नष्ट कर दी गयीं और जिन्हें आज़ाद देश में सांस लेने का मौक़ा मिला और जो इस्लाम की मज़बूत व्यवस्था और उसके शांतिप्रिय छांव तले पहुंच सके उन्हें भी उनकी मिस्री सेना जीने का हक़ नहीं देना चाहती। हक़ीक़त ये है कि क्रान्ति की आंधी ने हुस्नी मुबारक के क़दम ज़रूर उखाड़ दिये थे लेकिन उसकी जड़ें जो शासन के दूसरे वर्गों और देश की व्यवस्था में पेवस्त थीं उनको हिला न सकीं और इस्तेमारी शासन उनकी जड़ों को सींचता रहा और अपने काम के लिये तैयार करता रहा और आज उन्हीं के ज़रिये पूरे देश को गृहयुद्ध की भट्टी में झोंक दिया गया है। इस सारी तबाही में जहां ग़ैरों की साज़िशें हैं वहीं "अपनों" की नवाज़िशें भी हैं।

इस सूरतेहाल में इख़्वानियों ने हिंसा की राह अपनाने के बजाये जनता को साथ लेकर विरोध शुरू किया। सेना ने उनके विरोध का सामना हिंसा से किया और इख़्वानी ताक़त को तोड़ने के लिये हर तरह की चालें चलीं। लेकिन उनके हर सितम के सामने इख़्वानी और मज़बूत होते गये और शासन ये सोचने पर मजबूर हो गया कि उनको किस तरह घुटने टेकने पर मजबूर किया जाये। आख़िर में इख़्वानुल मुस्लिमीन को ही ग़ैर क़ानूनी साबित करने की कोशिश की जा रही है। जबकि ये भी एक सदाक़त है कि इख़्वान को ख़त्म करने या उनके असर को कम करने की कोशिशें बार–बार हो चुकी हैं। मिस्र के पूर्व राष्ट्रपति जमाल अब्दुल नासिर खुद इख़्वानियों का बाग़ी था और जनरल सीसी से अधिक ताक़तवर था। उसके ज़माने में इख़्वान के शीर्ष नेतृत्व को शहीद भी कर दिया गया लेकिन ये आन्दोलन न ख़त्म हुआ और न उसके ज़ोर में कमी आयी।

जनरल सीसी के बढ़ते हुए अत्याचार और सेना के हाथों मज़लूमों की तबाही से यक़ीनन हर इन्साफ़ पसंद बेचैन है और दुनिया भर के मुसलमान अपने दिलों में एक कुढ़न महसूस कर रहे हैं और वो रब्बे करीम के सामने दुआ कर रहे हैं लेकिन अल्लाह की ज़ात भी अपने बन्दों से किसी लम्हा ग़ाफ़िल नहीं है उसका नियम है कि जब भी वक़्त के फ़िरऔन का और उसके लश्कर का उरूज पर होता है और फ़िरऔनियत की घटांए छा जाती हैं तो यद मूसा की एक हल्की सी किरन पूरे अंधेरे को चीर देती है और इन्साफ़ के तराज़ू में हर एक के आमाल को तौल कर उसे जज़ा व सज़ा दी जाती है। बेशक अल्लाह के यहां न देर है, न अन्धेर।

मुहर्रम का महीना और आशूरा की हक़ीक़त

मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी

यूं तो साल के बारह महीने और हर महीने के तीस दिन अल्लाह तआला के पैदा किये हुए हैं। लेकिन अल्लाह तआला ने अपने पूरे साल में कुछ दिनों को विशेष बनाया है और उन दिनों के कुछ विशेष कार्य निश्चित किये हैं। ये मुहर्रम का महीना भी एक ऐसा ही महीना है जिसको कुरआन करीम ने एहतराम वाला महीना क़रार दिया है। अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में फ़रमाया कि चार महीने एहतराम वाले हैं उनमें से एक महीना मुहर्रम का है।

मुहर्रम की दसवीं तारीख़ को "आशूरा" कहा जाता है। जिसका अर्थ है "दसवां दिन" इस दिन को अल्लाह तआला की विशेष रहमत व बरकत हासिल है। जब तक रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ नहीं हुए थे उस वक़्त तक आशूरा का रोज़ा रखना मुसलमानों पर फ़र्ज़ था। बाद में जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुए तो आशूरा के रोज़े की फ़र्ज़ियत ख़त्म हो गयी। लेकिन हुज़ूर अकरम स0अ0 ने आशूरा के दिन रोज़ा रखने को सुन्नत और मुस्तहब (सवाब वाला) क़रार दिया। एक हदीस में हुज़ूर अक़दस स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि "मुझे अल्लाह तआला की रहमत से उम्मीद है कि जो शख़्स आशूरा के दिन का रोज़ा रखेगा तो उसके पिछले एक साल के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे।"

कुछ लोग ये समझते हैं कि आशूरा के दिन की फ़ज़ीलत का कारण ये है कि नबी करीम स0अ0 के प्यारे नवासे हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत का वाक़्या पेश आया, इस शहादत के होने की वजह से आशूरा का दिन मुक़द्दस और एहतराम वाला बन गया है और आप स0अ0 ने इस बारे में हुक्म बयान फ़रमाये थे और कुरआन करीम में इसके एहतराम का ऐलान है। हालांकि हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत का वाक़्या तो हुज़ूर स0अ0 के दुनिया से जाने के लगभग साठ साल बाद पेश आया। लिहाज़ा ये बात ठीक नहीं कि आशूरा का एहतराम इस वाक़्ये की वजह से है। बल्कि ये तो हुसैन रज़ि0 की फ़ज़ीलत की दलील है कि अल्लाह ने आप की शहादत का मर्तबा उस दिन अता फ़रमाया जो पहले ही से मुक़द्दस और एहतराम वाला है। बहरहाल आशूरा का दिन एक मुक़द्दस (पवित्र) दिन है।

इस दिन के मुकद्दस होने की वजह क्या है? ये अल्लाह तआला ही बेहतर जानते हैं। किस दिन को अल्लाह तआला ने दूसरे दिनों पर क्यों फ़ज़ीलत दी? और उस दिन का क्या मर्तबा रखा? अल्लाह तआला ही बेहतर जानते हैं। हमें इसकी बहस व खोज में पड़ने की ज़रूरत नहीं। कुछ लोगों में ये बात मशहूर है कि जब हज़रत आदम अलै0 दुनिया में उतरे तो वो आशूरा का दिन था और जब हज़रत नूह अलै0 की कश्ती तूफ़ान के बाद ज़मीन पर उतरी तो वो आशूरा का दिन था। हज़रत इब्राहीम अलै0 को जब आग में डाला गया और उस आग को अल्लाह तआला ने गुलज़ार बना दिया तो वो आशूरा का दिन था और क़यामत आशूरा के दिन आयेगी। ये बातें लोगों में मशहूर हैं लेकिन इन बातों की कोई अस्ल और बुनियाद नहीं। कोई रिवायत ऐसी नहीं जो ये बयान करती हो कि ये वाक़्ये आशूरा के ही दिन हुए।

सिर्फ़ एक रिवायत में है कि जब हज़रत मूसा अलै0 का मुक़ाबला फ़िरऔन से हुआ और हज़रत मूसा अलै0 दरिया के किनारे पर पहुंच चुके थे और पीछे फ़िरऔन का लश्कर आ रहा था तो अल्लाह तआला ने उस वक़्त हज़रत मूसा अलै0 को हुक्म दिया कि अपनी लाठी दरिया के पानी पर मारें जिसके नतीजे में दरिया में बारह रास्ते बन गये और उन रास्तों के ज़रिये हज़रत मूसा अलै0 का लश्कर दरिया के पार चला गया और जब फ़िरऔन दरिया के पास पहुंचा और उसने दरिया में सूखे रास्ते देखे तो वो भी दरिया के अन्दर चला गया लेकिन जब फ़िरऔन का पूरा लश्कर दरिया के बीच में पहुंचा तो वो रास्ते पानी में

मिल गये। ये वाक़्या आशूरा के दिन पेश आया। इसके बारे में एक रिवायत मौजूद है। लेकिन इसके अलावा जो दूसरे वाक़्ये हैं इनके आशूरा के दिन के होने की कोई अस्ल और बुनियाद नहीं है।

जैसा कि मैंने कहा कि हमें इस खोज में पड़ने की ज़रूरत नहीं कि किस वजह से अल्लाह तआला ने इस दिन को फ़ज़ीलत बख़्शी? बल्कि ये सब अल्लाह तआला के बनाये हुए दिन हैं वो जिस दिन को चाहता है अपनी रहमतों और बरकतों के नुज़ूल के लिये चुन लेता है। वो ही इसकी हिकमत व मस्लहत को जानने वाला है। ये बात हमारी और आपकी समझ से परे है। इसलिये इस बहस में पड़ने की ज़रूरत नहीं।

यद्यपि इतनी बात अवश्य है कि जब अल्लाह तआला ने इस दिन को अपनी रहमत व बरकत के नाज़िल होने के लिये चुना तो उसका मक़सद ये है कि इस दिन को उस काम में इस्तेमाल किया जाये जो नबी–ए–करीम स0अ0 की सुन्नत के मुताबिक़ हो। सुन्नत के तौर पर इस दिन सिर्फ़ एक हुक्म दिया गया है कि इस दिन रोज़ा रखा जाये। इसलिये एक हदीस में आप स0अ0 ने फ़रमाया कि इस दिन रोज़ा रखने से पिछले एक साल के गुनाह माफ़ हो जाते हैं। बस ये एक सुन्नत का हुक्म है इसकी कोशिश करनी चाहिये कि अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

इसमें एक मसला और भी है। वो ये कि आप स0अ0 ने अपने पवित्र जीवन में जब भी आशूरा का दिन आया रोज़ा रखा लेकिन दुनिया से जाने से पहले जो आशूरा का दिन आया तो आप स0अ0 ने आशूरा का रोज़ा रखा और साथ–साथ ये भी फ़रमाया कि दस मुहर्रम को हम भी रोज़ा रखते हैं और यहूदी भी रोज़ा रखते हैं और यहूदियों के भी रोज़ा रखने की वजह भी यही थी कि इस दिन बनी इस्राईल को अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलै0 के ज़रिये फ़िरऔन से नजात दी थी। इसके शुक्राने के तौर पर यहूदी इस दिन रोज़ा रखते थे। बहरहाल आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि हम भी इस दिन रोज़ा रखते हैं और यहूदी भी इस दिन रोज़ा रखते हैं जिसकी वजह से उनके साथ हल्की सी समानता पैदा हो जाती है इसलिये अगर आइन्दा साल ज़िन्दा रहा तो सिर्फ़ आशूरा का रोज़ा नहीं रखूंगा बल्कि इसके साथ एक रोज़ा और मिलाऊंगा 9 मुहर्रम या ग्यारह मुहर्रम का रोज़ा भी रखूंगा ताकि यहूदियों के साथ समानता समाप्त हो जाये। लेकिन अगले साल आशूरा का दिन आने से पहले हुज़ूर स0अ0 का विसाल हो गया और आप स0अ0 को इस पर अमल करने का मौक़ा नहीं मिला।

क्योंकि हुज़ूर स0अ0 ने ये बात इरशाद फ़रमा दी थी इसलिये सहाबा किराम रज़ि0 आशूरा के दिन के रोज़े में इस बात का ध्यान रखा और आशूरा के रोज़ें में 9 या 11 का एक रोज़ा मिलाकर रखा और उसको मुस्तहब क़रार दिया। केवल आशूरा के रोज़े रखने को हुज़ूर स0अ0 के इस इरशाद की रोशनी में मकरूह (मकरूह तन्ज़ीही ख़िलाफ़े ऊला) क़रार दिया यगा। यानि अगर कोई शख़्स सिर्फ़ आशूरा का रोज़ा रख ले तो वो गुनहगार नहीं होगा बल्कि उसको आशूरा का सवाब मिलेगा लेकिन क्योंकि आप स0अ0 की ख़्वाहिश दो रोज़े रखने की थी इसलिये उस ख़्वाहिश को पूरा करने के लिये बेहतर यही है कि एक रोज़ा और मिलाकर दो रोज़े रखे जायें।

रसूलुल्लाह स0अ0 के इस इरशाद में हमें एक और सबक़ मिलता है। वो ये ग़ैर मुस्लिमों के साथ छोटी सी समानता भी हुज़ूर स0अ0 ने पसंद न फ़रमायी। हालांकि वो समानता किसी बुरे और नाजायज़ काम में नहीं थी बल्कि एक इबादत में समानता थी कि उस जो इबादत वो कर रहे हैं हम भी उसी दिन वही इबादत कर रहे हैं लेकिन आप स0अ0 ने इसको भी पसंद न फ़रमाया... क्यों? इसलिये कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को जो दीन अता फ़रमाया है वो सभी धर्मों से श्रेष्ठ है और उन पर अधिपत्य रखता है। अतः एक मुसलमान का (ज़ाहिर व बातिन) अन्तः व बाह्य भी ग़ैर मुस्लिमों से श्रेष्ठ होना चाहिये। उसकी कार्यप्रणाली, उसकी चाल–ढाल, उसका रहन–सहन, उसके सारे काम, उसके आमाल, उसका व्यवहार, उसकी इबादतें इत्यादि हर चीज़ ग़ैर मुस्लिमों से श्रेष्ठ होनी चाहिये। इसीलिये हदीसों में जगह–जगह ये हुक्म मिलेगा कि हुज़ूर स0अ0 ने फ़रमायाः "ग़ैर मुस्लिमों से अलग तरीक़ा अख़्तियार करो।" एक और जगह फ़रमाया, "मुश्रिकीन जो अल्लाह तआला के साथ दूसरों को शरीक ठहराते हैं उनसे अपना ज़ाहिर व बातिन (अन्तः व बाह्य) अलग रखो।"

जब इबादत, बन्दगी और नेकी के काम में भी नबी करीम स0अ0 ने समानता पसंद नहीं कि तो और कामों में अगर मुसलमान उनका अनुसरण करे तो कितनी बुरी बात

होगी। अगर ये अनुसरण जानबूझ कर इस उद्देश्य से किया जाये कि उनके जैसा नज़र आऊंगा तो कबीरा गुनाह है। हुज़ूर स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया, "जो शख़्स किसी क़ौम की मुशाबहत (शक्ल बनाना व अनुसरण) करेगा वो उसी क़ौम के अन्दर दाख़िल है।" जैसे कोई शख़्स अंग्रेज़ों का तरीक़ा इसलिये अपनाता है कि मैं अंग्रेज़ लगूंगा तो कबीरा गुनाह है। लेकिन अगर दिल में ये नियत नहीं है कि उनके जैसा लगूंगा वैसे ही अनुसरण कर लिया तो कबीरा गुनाह तो नहीं मगर मकरूह ये भी है।

अफ़सोस ये है कि आज मुसलमानों को इस हुक्म का ख़्याल और लिहाज़ नहीं रहा। अपने काम करने के तरीक़े में, दिखने में, कपड़ों में, उठने–बैठने के अन्दाज़ में, खाने–पीने के तरीक़े में, ज़िन्दगी के हर काम में हमने ग़ैर मुस्लिमों के साथ समानता अपना ली है। उनकी तरह का लिबास पहन रहे हैं। उनकी ज़िन्दगी की तरह अपनी ज़िन्दगी का निज़ाम बनाते हैं। उनकी तरह खाते–पीते हैं। ज़िन्दगी के हर काम में उनकी नक़ल करने को हमने फ़ैशन बना लिया है। आप अन्दाज़ा करें कि हुज़ूर स0अ0 ने आशूरा के दिन रोज़ा रखने में यहूदियों के साथ बराबरी को पसंद नहीं किया। इससे सबक़ मिलता है हमने ज़िन्दगी के दूसरे हिस्से में ग़ैर मुस्लिमों की जो नक़ल की है, ख़ुदा के लिये इसको छोड़ दें और रसूलुल्लाह स0अ0 के तरीक़े की नक़ल करें। उन लोगों की नक़ल न करें जो रोज़ाना तुम्हारी पिटाई करते हैं। जिन्होंने तुम पर ज़ुल्म के पहाड़ तोड़े हों। जो तुम्हें जीने का हक़ देने को तैयार नहीं। उनकी नक़ल करके आख़िर तुम्हें क्या मिलेगा? हां दुनिया में भी ज़िल्लत होगी और आख़िरत में भी रुस्वाई होगी। अल्लाह तआला हर मुसलमान को इससे बचाये। (आमीन)

बहरहाल इस समानता से बचते हुए आशूरा का रोज़ा रखना बड़ी ही फ़ज़ीलत का काम है। आशूरा के रोज़े का हुक्म बरहक़ है। लेकिन रोज़े के अलावा आशूरा के दिन के बारे में लोगों ने दो और काम अपना रखे हैं। उनकी क़ुरआन व सुन्नत से कोई सनद नहीं है। जैसे कुछ लोगों का मानना है कि आशूरा के दिन फ़लां क़िस्म का खाना पकाना ज़रूरी है। अगर खिचड़ा न पकाया तो आशूरा के दिन की फ़ज़ीलत हासिल नहीं होगी। इस तरह की कोई बात न तो हुज़ूर स0अ0 ने फ़रमायी है और न ही सहाबा किराम या ताबईन या बुज़ुर्गों ने इस पर अमल किया। सदियों तक इस काम का कहीं वजूद नहीं मिलता। दूसरा क़ज़ा नमाज़ों का फ़िदिया।

हां एक कमज़ोर हदीस है, मज़बूत नहीं है, उसमें हुज़ूर स0अ0 का ये इरशाद नक़ल है कि जो शख़्स आशूरा के दिन अपने घर वालों और लोगों को जैसे बीवी बच्चे, घर के नौकर इत्यादि उनके आम दिनों के मुक़ाबले में अच्छा खिलाये यानि उस दिन आम दिनों के मुक़ाबले में उम्दा और अच्छा खाना बनाये तो अल्लाह तआला उसकी रोज़ी में बरकत फ़रमायेगें। लेकिन अगर कोई शख़्स उस पर अमल करे तो कोई हर्ज नहीं बल्कि अल्लाह तआला की रहमत से उम्मीद है कि इस काम के जो फ़ायदे बताये गये हैं वो इंशाअल्लाह मिलेंगे। लिहाज़ा इस दिन घर वालों को अच्छा खाना खिलाना चाहिये। इससे ज़्यादा जो लोंगो ने जो चीज़े अपनी तरफ़ से बना ली हैं उनकी कोई अस्ल और बुनियाद नहीं।

क़ुरआन करीम ने जहां एहतराम वाले महीनों का ज़िक्र फ़रमाया है उस जगह एक अजीब जुम्ला इरशाद फ़रमाया है कि, "यानि उन एहतराम वाले महीनो में तुम अपनी जानों पर ज़ुल्म न करो।" और ज़ुल्म न करने का मतलब ये है कि इन महीनों में गुनाहों से बचो। बिदअत और मुनकिरात से बचो। क्योंकि अल्लाह तआला तो आलिमुल ग़ैब है जानते थे कि इन एहतराम वाले महीनों में लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म और अपनी तरफ़ से इबादत के तरीक़े गढ़कर उन पर अमल करना शुरू कर देंगे इसलिये फ़रमाया कि अपनी जानों पर ज़ुल्म न करो।

शिया हज़रात इस महीने मे जो कुछ करते हैं वो अपने मसलक के अनुसार करते हैं। बहुत से अहलेसुन्नत हज़रात भी ऐसी मजलिसों में, ताज़िया और उन कामों में शरीक हो जाते हैं जो बिदअत और मुनकर की तारीफ़ में हैं। क़ुरआन करीम ने तो साफ़ हुक्म दे दिया कि इन महीनों में अपनी जानों पर ज़ुल्म न करो। बल्कि इस वक़्त को अल्लाह की इबादत में और उसके ज़िक्र और रोज़ा रखने और उसकी ओर आकर्षित होने और उससे दुआंए करने में ख़र्च करो और उनसे लाभान्वित हो। अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल व करम से इस महीने के एहतराम और आशूरा के एहतराम और महानता से फ़ायदा उठाने की हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और अपनी रज़ा के मुताबिक़ इस दिन को गुज़ारने की हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

मिस्र तेरे हाल पे रोना आया

मौलाना मुहम्मद अलाउद्दीन नदवी

सच व झूठ की लड़ाई एक सदा रहने वाली वास्तविकता है। इस संसार के पैदा किये जाने से भी पहले इसका आरम्भ उसी समय हो गया था जब अल्लाह तआला ने आदम अलै0 को बनाने की मंशा ज़ाहिर की थी, फ़रिश्तों की फ़रमाबरदारी के मुक़ाबले शैतान का सजदा करने से इनकार करना बातिल का पहला प्रदर्शन था। आख़िरकार उसकी शैतानियत और शैतान परस्ती ने हज़रत आदम को जन्नत से निकलवा कर ही दम लिया।

इस्लाम के इतिहास का हर–हर पन्ना उसकी खींचतान से भरा पड़ा है। मुहम्मद स0अ0 की उम्मत के साढ़े चौदह सौ साल के इतिहास का एक दिन भी ऐसा नहीं गुज़रा कि उसे सच व झूठ की लड़ाई से दूर रखा गया हो और शैतानी गुर्गों ने उसे चैन की सांस लेने दी हो। ख़ासकर आप स0अ0 के दुनिया से जाने के तुरन्त बाद जज़ीरतुल अरब में मुरतद होने (इस्लाम से फिर जाने) का फ़ित्ना जंगल में आंधी की तरह फैलता है बल्कि आप स0अ0 की वफ़ात से पहले ही नबूवत के दावे का फ़ित्ना सर उठाता है। ख़तरनाक जंगे होती हैं। मगर हज़रत अबूबक्र जैसे नर्म दिल इन्सान की अद्वितीय महानता व मर्दान्गी और धैर्य व दृढ़ता और सहाबा किराम की सामूहिक व संगठित मदद इरतदाद (मुरतद होना यानि इस्लाम छोड़ देना) की आंधी को कुचल देती है और इस्लाम के चेहरे को पहले से ज़्यादा प्रकाशमान बनाकर छोड़ती है। मुरतद होने का ये फ़ित्ना ख़ुद इस्लामी दुनिया के पेट से फूटा है।

सलीबी जंगों की व्यवस्थित और ताक़तवर साज़िश ने इस्लामी दुनिया को जड़ से उखाड़ देना चाहा था और पूरा यूरोप अपनी सारी ताक़त इस उद्देश्य के लिये झोंक चुका था। मगर सलाहुद्दीन जैसे ग़ैरतमन्द मुजाहिद मर्द ने सलीबियों की कलाइयां मरोड़ दीं और उनको न केवल ये कि मुंह की खानी पड़ी बल्कि क़िब्ला अव्वल को दोबारा विजयी कर लिया गया। ये इस्लाम के हमेशा के दुश्मन थे जो इस्लाम को मिट्टी में मिला देने का इरादा लेकर आये थे।

बग़दाद में तातारियों का वहशियाना हमला मानवता के माथे पर एक धब्बा है जो कभी धुल न पायेगा। ये एक ख़ुदाई आफ़त कि आसमान ज़मीन पर आ गिरा और हर चीज़ को मटियामेट कर गया। ये एक क़यामत थी जो बग़दाद के लोगों पर टूटी थी। कुछ भी हो मगर वो एक वहशी, उजड्ड और अनजान दुश्मन का हमला था। वक़्त के साथ–साथ इसका कड़वा, ज़हरीला और नापाक घूंट भी मुसलमानों ने बर्दाश्त किया और एक समय आया कि इस्लाम के ये वहशी, गंवार और दरिंदे दुश्मन इस्लाम की झोली में आ गिरे।

मगर आज जो नाज़ुक स्थिति मिस्र की है वो इन सबसे हट कर है। इस समय वो ख़ूनी दरिया में डूबा हुआ है। वहां लाशें तैर रहीं हैं। वहां धुंए और बारूद का शासन है। मशीन गनें हैं और पूरी सम्पत्ति दरिन्दे डाकुओं के क़ब्ज़े में है। ख़ून में नहाये हुए मिस्र की ये दुर्गत उसके दुश्मनों ने नहीं बनायी है बल्कि उनके भाइयों ने उन्हें आग की ख़न्दक़ में ढकेला है। जलते हुए मिस्र की वर्तमान स्थिति निफ़ाक़, बदमाशी, गुन्डागर्दी, अमानवीय और इस्लाम दुश्मनी की तह दर तह परतों में लिपटी हुई है और मामला ऐसे नाज़ुक मोड़ पर पहुंचा दिया गया है कि पूरी इस्लामी दुनिया सदमे में है। स्तब्ध दोराहे पर खड़ा है और दिमाग़ी रूप से अपंग नज़र आ रहा है, ज़बानों पर ताले पड़े हुए हैं, दीन के चाहने वालों का तो जीना हराम है, फिरऔनियत दनदना रही है, नासिरियत, चंगेज़ियत का प्रदर्शन कर रही है। जो सदमे से बाहर हैं वो ज़हनी उलझाव का शिकार हैं। इस समय कम से कम लेखक की जो कैफ़ियत है उसे शब्दों में बयान करने की ताब नहीं हैं। क़लम गूंगा है, भावहीनता है, दिल रंज में है और सोच थर्रायी हुई है, मिस्र के बारे में कुछ पढ़िये, कुछ सोचिये, कुछ देखिये तो दर्द की टीसें बढ़ जाती हैं।

एक क़िस्सा है कि एक औरत के बच्चे को उसका भाई

जान से मार डालता है। इस औरत का अपने बेटे और भाई के सिवा तीसरा इस दुनिया में कोई नहीं है। अब अगर औरत बदले की मांग करती है तो उसका भाई मारा जाता है। इस तरह वो अपने दो हाथों में से दोनों हाथों से महरूम हो जाने के ख़तरे से परेशान रहती है।

लोग कहते हैं "मिस्र के हालात पर लिखो! क्यों नहीं लिखते" मैं क्या लिखूं? किसके ख़िलाफ़ लिखूं? इन्सान के तो दो ही बाज़ू होते हैं। एक बाज़ू मासूम बच्चे की शक्ल में मार दिया जाता है, उसके लिये मातम तो किया जा सकता है, उसके क़ातिल से बदला लेने की हिम्मत कैसे की जा सकती है? अगर ऐसा कर लिया जाये तो दूसरा बाज़ू भी मार दिया जाता है और मुसीबत ज़दा बेबस औरत (बेटा और भाई के सहारों से) महरूम हो जाती है।

दुनिया में जिन्हें दीन प्यारा है, वो दीन जो ग़ालिब बनकर रहने के लिये आया है काफ़िरों की मातहती क़ुबूल करके कुफ़्र के साये में ज़िन्दगी गुज़ारे या मुसलमान शासकों के दरबार का दास बनकर रहने नहीं आया। बल्कि ख़ुदाई वादा (अपने दीन को सारे दीन पर ग़ालिब करेगा) के मुताबिक़ (हक़ ग़ालिब होगा और वो मग़लूब नहीं हो सकता) की शान दिखाने आया है। दीन की ऐसी फैली हुई रब्बानी सोच रखने वालों की इस वक़्त वही कैफ़ियत है जो कैफ़ियत उस ग़मज़दा और मुसीबत की मारी औरत की है, जिसका भाई और मृतक पुत्र दोनों मौत की आग़ोश में चले जायें।

मिस्र के वर्तमान संकट की स्थिति किसी एक देश का आन्तरिक मामला बिल्कुल नहीं है। ये इस्लाम को चोट पहुंचाने और इस्लाम पसंदो को ज़लील और रुस्वा करने की ऐसी घिनावनी साज़िश है जिसकी कोई मिसाल इस्लाम के इतिहास में नहीं मिलती।

पुराने ज़माने से लेकर आज तक उम्मते मुस्लिमा में मुनाफ़िक़ीन आस्तीन के सांप बनकर घुसे रहे हैं और इस्लाम को नुक़सान पहुंचाते रहे हैं। मगर ऐसी भी कोई मिसाल नहीं मिलती की पूरे पूरे मुसलमान देश इस्लाम के ख़िलाफ़ ऐसे एक हो गये जैसे मिस्र के इस्लाम पसंदो के ख़िलाफ़। कितनी खुली हुई हक़ीक़त है कि किसी ग़ैर मुस्लिम देश के शासक और एक मुसलमान देश के शासक में कोई अन्तर नहीं है। धर्म के तंग दायरे में कार्य की स्वतन्त्रता तो अल्पसंख्यकों को भी प्राप्त है और हमारे इस्लामी देशों के शासक भी यही चाहते हैं कि उनके नागरिक "धर्म" पर अमल करें और शासन व राजनीति का इस्लामीकरण करने का प्रयास और कुर्सी की ओर देखने की जुर्रत कभी न करें। इस उम्मत की बहुत बड़ी बदक़िस्मती है कि ख़िलाफ़त–ए–राशिदा के बाद इस प्रकार की इस्लामी हुकूमत से मुसलमान उम्मत का सामना पड़ा और ख़लीफ़ा व शासकों ने हमेशा इस्लाम को दास बनाकर रखा। अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले हक़ पसंदो का स्वागत सांय–सांय करते हुए कोड़ों से किया।

इस्लाम को अपने इतिहास में अनगिनत वैचारिक आक्रमणों और शैतानी फ़ित्नों का शिकार होना पड़ा। किन्तु वर्तमान युग में पश्चिमी सभ्यता की लानत ने मुसलमान उम्मत पर जो वैचारिक हमला व ज़हनी साज़िश की है उसके ज़हरीले और जानलेवा असर से अभी एक सदी आगे तक सुरक्षित न रह सकेगी। इस पश्चिमी हमले वैचारिक दृष्टिकोण बदल दिये हैं, ज़हन की बनावट बदल दी है, दिमाग़ की बहुत अच्छी तरह से वाशिंग कर दी है, उसने मुरतद होने (इस्लाम छोड़ देने) के बीज बोये। उसने विचारों की गुलामी की ज़ंजीरे इस सावधानी से बिछायीं और उसके विचारको ने ऐसे हसीन जाल बिछाये कि नौजवान नस्लों को फासने में वो पूरी तरह से कामयाब रहे।

ऐ मुसलमानों! पश्चिम ने तुमको गुलाम बनाना चाहा और तुम बन गये। जब आज़ादी की नौबत आयी तो उसने तुम्हारे एक "सयुंक्त इस्लामी शासन" के टुकड़े–टुकड़े कर डाले और हर एक को ये पाठ पढ़ाया कि आगे तुम अपनी सुरक्षा चाहते हो तो हमसे सैन्य संधि करो और तुम मान गये। उसने अपनी शर्तों की बुनियादों पर तुम्हें क़र्ज़ की पेशकश की और तुमने बहुत बड़ी नेमत समझकर उसे क़ुबूल किया। उसने उन्नति की राह सुझाकर अपनी शिक्षा व्यवस्था ज़हर की पोटली में बांधकर तुम्हें दिया और तुमने उसे आबे हयात (अमृत) जानकर उस व्यवस्था के सांचे में अपनी नस्ल को ढ़ालने में लग गये। उसने चाहा कि तुम दीन को राजनीति से अलग रखो और धर्मनिरपेक्षता के प्रकाश में क़ानून बनाओ और तुमने कहाः जनाब आपकी बात सर आंखों पर!! उसने तुमको रोटी, कपड़ा और मकान का झांसा और बराबरी का खुशनुमा नारा देकर पूंजीवाद की गोलियां खिलायीं और तुम खाते चले गये और बड़े–बड़े कामरेड पैदा करने लगें। ..(शेष पेज 10 पर)

मुसलमानों से आबाद भारतीय जेलें

धर्मनिरपेक्ष गणतन्त्र पर सवालिया निशान?

जनाब असदुर्रहमान तीमी

ये आश्चर्यचकित करने वाली वेदना है कि भारतीय मुसलमान एक धर्मनिरपेक्ष गणतन्त्र के निवासी होने के बावजूद आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक स्तर पर बहुत पीछे हैं। लेकिन जेलों में आबादी के अनुपात से उनकी संख्या दो गुनी है। कहा जाता है कि अगर कोई भारतीय मुसलमान है तो इस बात का ख़तरा कहीं ज़्यादा है वो सलाख़ों के पीछे हो चाहे वो देश के किसी भी राज्य का रहने वाला हो। ये रिपोर्ट भारत की मशहूर साप्ताहिक पत्रिका "इण्डिया टुडे" (19 दिसम्बर 2012) की है। गृह मंत्रालय के अन्तर्गत कार्य करने वाली संस्था "नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो" के आंकड़ों से भी यही पता चलता है। पश्चिम बंगाल जहां एक लम्बे समय तक थर्ड फ्रन्ट का शासन रहा वहां भी जेलों में लगभग आधे क़ैदी मुसलमान हैं। जबकि वहां कभी किसी साम्प्रदायिक पार्टी का शासन नहीं रहा। महाराष्ट्र में हर तीसरा क़ैदी और उत्तर प्रदेश में हर चौथा क़ैदी मुसलमान है।

केवल तीन राज्यों जम्मू कश्मीर, पान्डिचेरी और सिक्किम को छोड़कर आम तौर पर हर राज्य में आबादी के अनुपात से मुसलमानों की संख्या जेलों में अधिक है। 2001ई0 की जनगणना के अनुसार भारत में मुसलमानों की आबादी 13.4 प्रतिशत और दिसम्बर 2011ई0 में नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ो के अनुसार भारतीय जेलों में मुसलमानों की संख्या लगभग 21 प्रतिशत है। ज़ाहिर है कि ये सबकुछ शासन में मुसलमानों के ख़िलाफ़ पक्षपात का परिणाम है। इसी साल महाराष्ट्र की जेलों में किये गये टाटा इन्सटिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज़ के अध्ययन से मुसलमानों के लिये पुलिस और न्यायालय का पक्षपात प्रकट होता है।

आइये भारत के हर एक राज्य में मुसलमानों की आबादी और जेलों में उनकी संख्या पर एक नज़र डालते हैं:

राज्य	आबादी का प्रतिशत	जेलों में संख्यां
उत्तर प्रदेश	18.49	25.12
आसाम	30.91	33.79
आंध्र प्रदेश	9.16	14.8
अरूणाचल प्रदेश	1.9	10.90
उत्तराखंड	11.92	27.53
उड़ीसा	2.07	4.19
बिहार	16.53	16.76
पश्चिम बंगाल	25.24	45.60
छत्तीसगढ़	1.97	5.21
चन्डीगढ़	3.95	11.34
दिल्ली	11.72	22.71
गेवा	6.84	22.3
गुजरात	9.06	22.07
हिमाचल प्रदेश	1.97	4.17
हरियाणा	5.78	9.19
जम्मू कश्मीर	66.97	46.93
झारखंड	13.84	16.47
केरेला	24.69	29.95
कर्नाटक	12.22	15.91
मध्य प्रदेश	6.36	12.81
महाराष्ट्र	10.60	33.68
मिज़ोरम	1.13	4.54
मनीपुर	8.81	16.67
मेघालय	4.27	17.49
नागालैन्ड	1.75	14.45
पंजाब	1.56	4.12
पांडिचेरी	6.09	4.54
राजस्थान	9.54	18.29
सिक्किम	1.42	0.52
तमिलनाडु	5.56	12.52
त्रिपुरा	7.95	19.24

लेकिन सवाल ये है कि मुसलमानों की इतनी बड़ी संख्यां के जेल में होने का कारण क्या है? सामाजिक दृष्टिकोण से इसका अध्ययन नहीं किया गया है किन्तु इस क्रम में बहुत से दृष्टिकोण प्रस्तुत किये गये हैं। कुछ लोग इसे मुसलमानों की ग़रीबी, अशिक्षित होना, शासन व प्रशासन में मुसलमानों के साथ होने वाला पक्षपात और राजनीतिक पहुंच की कमी का नतीजा मानते हैं। दूसरी ओर आतंकवाद के आरोपों मे मुस्लिम नौजवानों को जेल में डालने का भी एक सिलसिला है जबकि बहुत सारे मामलों में वो बेकुसूर साबित हुए हैं। एक कहानी दिल्ली के मुहम्मद आमिर ख़ान की है। दिसम्बर 1996ई0 और अक्टूबर 1997ई0 में दिल्ली, रोहतक, सोनीपत और ग़ाज़ियाबाद में लगभग 20 हैन्डग्रेनेड विस्फोट के आरोप में गिरफ़्तार 18 साल के मुहम्मद आमिर ख़ान को 14 साल बाद न्यायालय ने बेकुसूर क़रार दिया लेकिन उन चौदह सालों में उसकी दुनिया उजड़ गयी। मुसलमानों की इतनी बड़ी संख्यां जेलों में होने का कारण अधिकतर शासन प्रशासन में मुसलमानों के ख़िलाफ़ पक्षपात और साम्प्रदायिकता है। इसीलिये प्रधानमंत्री के जरनल सेक्रेट्ररी प्रकाश करात कहते हैं, "पुलिस प्रशासन मुसलमान के विरुद्ध पक्षपाती है। जब भी कोई वारदात होती है मुस्लिम नौजवानों को पकड़ा जाता है।"

यूपी के अल्पसंख्यक कार्यो के मन्त्री आज़म ख़ान कहते है, "निदोर्ष मुस्लिम नौजवानों को आतंकवादी बताकर जेलों में ठूंस दिया जाता है। साम्प्रदायिक दंगों में यही वर्ग प्रभावित होता है और पुलिस इन्हीं लोगों को जेल में बन्द कर देती है।"

जमीयत उलमा हिन्द के जनरल सेक्रेट्ररी मौलाना महमूद मदनी कहते है, "मुसलमानों की हालत दलितों से भी बदतर है। अपने निकम्मेपन को छिपाने के लिये पुलिस वाले निदोर्षों को पकड़ कर मुजरिम बना देते हैं।"

मध्य प्रदेश की जेलों में 13 प्रतिशत क़ैदी मुसलमान हैं जबकि राज्य में उनकी संख्या केवल 6 प्रतिशत है। उनमें से बहुत सारे क़ैदी जिनका केस चल रहा है एक लम्बे अर्से से बन्द हैं। इस पर पूर्व ओलम्पिक खिलाड़ी पूर्व मंत्री असलम शेर ख़ान कहते हैं, "मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार मुसलमानों के लिये बहुत सख़्त है। उन्हें अधिक संख्यां में जेलों में डालकर चुनावी लाभ उठाने के लिये उनकी ग़रीबी और लाचारी की कहानी तैयार करती है।"

लेकिन जिन राज्यों की सरकारें ख़ुद को सेक्यूलर कहती हैं वहां भी हालत बेहतर नहीं। दिल्ली में 23 प्रतिशत क़ैदी मुसलमान हैं जबकि उनकी आबादी 12 प्रतिशत ही है। यही हाल महाराष्ट्र, यूपी और पश्चिम बंगाल का है जहां सेक्यूलर शासन हैं। लेकिन मुसलमान क़ैदियों की संख्या उनकी आबादी के अनुपात से दोगुनी है।

वास्तविकता ये है कि मुसलमानों के साथ हमदर्दी का दम भरने वाली राजनीतिक पार्टियां भी सत्ता पाने के बाद कुछ नहीं करती। उत्तर प्रदेश के समाजवादी शासन ने भी चुनाव से पहले वादा किया था कि ग़लत इल्ज़ाम में फंसा कर जेल में डाले गये मुस्लिम नौजवानों का रिहा कर दिया जायेगा लेकिन अभी तक उसका कोई नतीजा नहीं निकला।

शेष : मिज़ तेरे हाल पे रोना आया

उसने तुमको क़ौमियत और देशभक्ति का नया पाठ पढ़ाया और तुमने आलमगीर दीनी, व्यवहारिक व मानवमूल्यों को भूल करके क़ौमियत को नयी चीज़ समझने लगे। उसने तुमसे कहा दीन को राजनीति से दूर रखो और उन्नति चाहते हो तो पश्चिम का अनुसरण करो और तुम उसके पीछे भागते चले गये। अब तुम अपनी सभ्यता, अपने आदर्श, अपनी इस्लामियत, अपने अतीत के वरसे और अपने उन्नति के कारणों से इतने दूर चले गये और ऐसे बेगाना हो चले कि अल्लाह व रसूल का नाम लेने वाले इस्लामी जीवन व्यवस्था के प्रकाश में जीवन निर्वाह करने वाले आतंकवादी नज़र आने लगे हो?! वो नौजवान जिनकी नज़रें किताब व सुन्नत पर गहरी नहीं हैं और जो किसी दर्जे में अपने धार्मिक मार्गदर्शकों और मुस्लिम शासकों के कामों को मार्गदर्शन समझकर अनुसरण करते हैं, वर्तमान रविश से उचाट होकर अगर उनका इस्लाम पर से भरोसा उठ जाये तो इन्हीं की ग़लत पालिसियां ज़िम्मेदार होंगी। फिर चाहे ये दुनिया में कितना तनतना दिखां लें आख़िरत में ख़ुदा की पूछताछ से बच नही सकते!!! जो ज़हर ये इस समय उम्मत के जवानों को दे रहे हैं ये परिणाम है उसी ज़हरीली पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था का जिसके कांटेदार और कड़वे फल तुमको मिल रहे हैं।

अफ़सोस सद अफ़सोस कि शाहीं न बना तू
देखे न तेरी आंखों ने फ़ितरत के इशारात

इमाम अबू हनीफ़ा रह0 की शान

ख़्वाजा कलीमुद्दीन असअदी

आप स0अ0 ने क़यामत की जो निशानियां बयान फ़रमायीं हैं उन निशानियों में से एक निशानी ये भी है कि उम्मत में बाद में आने वाले लोग पहले आने वाले लोगों पर टीका–टिप्पणीं करेंगे। लिहाज़ा इस फ़ित्ना भरे दौर में जहां हुज़ूर स0अ0 की बयान की हुई बहुत सी निशानियां प्रकट हो रही हैं ये पहचान भी ज़ाहिर हो रही है कि दीन से बेज़ार और दीन से बिलकुल अनजान आज़ाद लोग अपने बुरे इरादों की राह में जिन हस्तियों को अपने ख़िलाफ़ पाते हैं उन पर खुलकर टिप्पणी करते हैं और उसमें किसी के स्थान व मर्तबे का लिहाज़ तक नहीं करते। यहां तक कि उन दीन से बेज़ारों की आलोचनाओं से अम्बिया किराम, सहाबा किराम, ख़ुलफ़ाये राशिदीन और अइम्मा मुजतहदीन भी महफ़ूज़ नहीं। आजकल जिन मोहतरम शख़्सियात पर टिप्पणी की जा रही है उनमें एक शख़्सियत हज़रत इमाम–ए–आज़म नोमान बिन साबित अबूहनीफ़ा रह0 हैं।

उम्मत के एक ख़ास वर्ग को हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह0 से दुश्मनी और नफ़रत है। कभी तो ये वर्ग इमाम साहब की फ़िक़्ही राय और इजतहादी मसलों को कुरआन व हदीस के विपरीत घोषित कर देता है और कभी ख़ुद उनके इल्म और उनके फ़क़ीहाना मक़ाम की बिल्कुल काट कर देता है। इस सिलसिले में बहुत सी मैग्ज़ीन व लेख भी लिखे जाते हैं और मजलिसों में बातचीत का विषय भी बनाया जाता है।

हमारे बुज़ुर्गों में वो जलीलुल क़द्र उलमा व मुज्तहदीन जो अपने–अपने वक़्त के इमाम थे। उन्होंने न केवल इमाम अबूहनीफ़ा रह0 की ख़िदमत को क़द्र की निगाह से देखा है बल्कि उनकी महानता और दीन में उनकी समझ में उनकी इमामत को स्वीकार किया है। इसीलिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 फ़रमाते हैः "मैं इमाम मालिक रह0 की ख़िदमत में हाज़िर था। एक बुज़ुर्ग तश्रीफ़ लाये, जब वो उठकर चले गये तो हज़रत इमाम मालिक रह0 ने फ़रमायाः जानते हो ये कौन थे? वहा बैठे लोगों ने कहा कि नहीं जानते, तो हज़रत इमाम मालिक रह0 फ़रमाने लगे, ये अबू हनीफ़ा रह0 हैं, इराक़ के रहने वाले है, अगर ये कह दें कि ये खम्बा सोने का है तो वो वैसा ही निकल आये। उन्हें फ़िक़ में ऐसी तौफ़ीक़ दी गयी है कि इस फ़न में ज़रा मशक़्क़त नहीं हुई।"

2. इमाम शाफ़ई ने इमाम मालिक रह0 से पूछा कि क्या आपने हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा रह0 को देखा है। इमाम मालिक रह0 ने फ़रमाया, हां मैने अबू हनीफ़ा को देखा है, वो ऐसे शख़्स थे कि अगर तुमसे उस खम्बे के सोना साबित करने की दलील बयान करें तो वो ज़रूर अपनी बहस में कामयाब होंगे।

3. और इमाम शाफ़ई रह0 फ़रमाते हैंः जो शख़्स फ़िक़ हासिल करना चाहता है वो इमाम साहब को और आपके असहाब को पकड़ ले, क्योंकि तमाम लोग फ़िक़ में इमाम अबूहनीफ़ा के शार्गिद हैं।

इमाम शाफ़ई रह0 ने ये भी फ़रमाया कि मैंने इमाम अबूहनीफ़ा रह0 से ज़्यादा फ़क़ीह किसी को नहीं देखा।

4. हज़रत सुफ़ियान बिन ऐनिया रह0 फ़रमाते हैंः मेरी आंख ने अबूहनीफ़ा के जैसा नहीं देखा। और फ़रमाते हैंः उलमा तो ये थे, इब्ने अब्बास अपने ज़माने मे, इमाम शाफ़ई अपने ज़माने में, इमाम अबूहनीफ़ा अपने ज़माने में, और सुफ़ियान सूरी अपने ज़माने में।

5. शेख़ुल इस्लाम हज़रत यज़ीद बिन हारून फ़रमाते हैंः वल्लाह इमाम अबूहनीफ़ा रह0 इस उम्मत में ख़ुदा और उसके रसूल से जो कुछ वारिद हुआ है उसके सबसे बड़े आलिम हैं।

6. सैय्यदुल हुफ़्फ़ाज़ हज़रत यहया बिन मईन फ़रमाते हैंः आप पूरी तरह से भरोसे के लायक़ हैं। ऐसे शख़्स के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है जिसको इब्नुल मुबारक और वकीअ ने प्रमाणित किया है।(शेष पेज 17 पर)

मानवीय नर्वस तन्त्र को बर्बाद करने वाले

रसायनिक हथियार

वर्तमान युग में ऐसे–ऐसे भयानक रसायनिक हथियार बनाये जा चुके हैं जिनका प्रयोग किसी भी युद्ध, सैन्य आपरेशन या आतंकवाद की समाप्ति के लिये की जाने वाली किसी भी कार्यवाही का न केवल पांसा पलटने की योग्यता रखते हैं बल्कि दुश्मन को बहुत तकलीफ़ देह, भयानक व इबरतनाक मौत का सामना भी कराते हैं।

रसायनिक हथियारों की मौजूदगी को कारण बनाकर कई देशों के ख़िलाफ़ न केवल सैन्य कार्यवाही की गयी बल्कि अब भी कुछ देशों पर बड़े पैमाने पर तबाही फैलाने वाले रसायनिक हथियारों का भण्डार रखने का आरोप लगाकर अमन व शांति के फ़र्ज़ी ठेकेदार बरबर्ता के लिये पर तौल रहे हैं।

यानि रसायनिक व हयातयाती हथियारों को युद्ध व सैन्य आपरेशन में प्रयोग करने के साथ–साथ प्रोपगण्डे के तौर पर भी एक बहुत ही प्रभावित हथियार के तौर पर भी रसायनिक हथियारों का प्रयोग हुआ। ऐसे बहुत से देश और उनकी फ़ौजो को बदनाम करने के लिये और उनके विरुद्ध युद्ध थोपने व पाबन्दियां लगाने हेतु एक कारण पैदा करने के लिये भी प्रयोग किया गया।

कुछ बड़े–बड़े और ज़माने भर में बदनाम रसायनिक हथियारों की चर्चा की जाये तो सबसे पहले इन्सानी दिमाग़ पर असर करने वाले रसायनिक हथियारों की चर्चा महत्वपूर्ण है। मानव मस्तिष्क को पूरे शरीर में एक विशेष महत्व प्राप्त है। जंग के दौरान इन्सान के सोचने, समझने, निर्णय करने और किसी भी काम को करने की योग्यता का दारोमदार उसके दिमाग़ पर होता है। सीरीन, सोमान, साइक्लो सीरीन और ताबून ये ऐसे रसायनिक हथियार हैं जो इन्सान के "नर्वस सिस्टम" को अपना निशाना बनाते हैं।

दूसरे नम्बर पर खाल को जला देने वाले रसायनिक हथियार हैं। ब्लस्टरिंग एजेन्ट (Blustering Agent) नामक ये रसायनिक हथियार जिसमें "मस्टर्ड गैस" मिली है विरोधी सेना को जलाकर भस्म कर देने की योग्यता रखती है। इस्राईल ने मिस्र की सेना के विरुद्ध होने वाली दोनों बड़ी जंगों में इन भयानक रसायनिक हथियारों का खुलकर प्रयोग किया था।

रसायनिक हथियारों का एक और भयानक रूप सांस रोककर बहुत दर्दनाक मौत का सामना कराने वाले केमिकल्ज़ क्लोरीन और फ़ासजीन इत्यादि शामिल हैं। इन रसायनिक हथियारों का शिकार बनने वाले की सांस की नली बन्द हो जाती है और दम घुटने से वो बहुत भयानक मौत मरता है। ऐसे रसायनिक हथियार भी हैं जिनके शिकार व्यक्ति पर ऐसे प्रभाव होते हैं जैसे लकवा मार गया हो। अच्छा ख़ासा सेहतमन्द इन्सान इन हथियारों के असर के कारण कोई भी हरकत करने के क़ाबिल नहीं रहता। ऐसे रसायनिक हथियारों को आतंकवादियों पर क़ाबू पाने के लिये भी प्रयोग किया जा सकता है। एक रसायनिक हथियार ऐसा भी है जिसका शिकार व्यक्ति उलटियां करके निढाल, बेहाल और अगर चिकित्सीय सेवा न मिले तो मौत का भी सामना हो सकता है।

आख़िर में चर्चा हो जाये ऐसे रसायनिक हथियारों की जिसका अत्यकिध प्रयोग अपनी ही जनता द्वारा किये गये विरोध प्रदर्शनों को रोकने व भीड़ को तितर–बितर करने के लिये किया जाता है। वो रसायनिक हथियार है "आंसू गैस" इसके प्रयोग से प्रभावित व्यक्ति व भीड़ जो क़ाबू से बाहर हो गयी हो को क़ाबू में किया जाता है।

जैसे–जैसे रसायनिक हथियारों का प्रयोग बढ़ रहा है वैज्ञानिक उनका तोड़ निकालने के साथ–साथ पहले से अधिक घातक व प्रभावित रसायनिक हथियार बनाने में दिन–रात व्यस्त हैं। अब परम्परागत युद्ध में रसायनिक हथियारों का प्रयोग एक ऐसा प्रभावित हथियार है जो विरोधियों को संभलने का कोई मौक़ा नही देता। ऐसे–ऐसे नये रसायनिक हथियार तैयार किये जा चुके हैं जिनका प्रयोग मानवता के लिये बहुत ही तकलीफ़ देने वाला और भयानक मौत की स्थिति में ही निकलता है।

लम्हों ने ख़ता की सदियों ने सज़ा पायी

मौलाना शमसुल हक़ नदवी

इस दुनिया को अल्लाह तआला ने माध्यमों पर आधारित कर दिया है। इस दुनिया में जो कुछ होता है उसका कुछ न कुछ कारण होता है। बादल फटते हैं तब पानी बरसता हैं। पानी बरसता है तब खेती उगती है। धूप की तेज़ी व तपिश फलों व ग़ल्लों को पकाती है। दुनिया के जीवों में बढ़ोत्तरी और नस्लीकरण की व्यवस्था हर अक़्लमन्द के सामने है। स्वयं मानवीय कार्यों के परिणाम उसके प्रयासों व हरकत ही से वजूद में आते हैं। बादल न उठें पानी नहीं बरसेगा, पानी न बरसे खेती नहीं उगेगी। फलों–फूलों और ग़ल्लों का वजूद नहीं होगा या उनको धूप की तपिश न मिले तो सब बेकार व बेमज़ा हो जायेंगे। जीवों में मिलन न हो तो नस्ल नहीं बढ़ेगी। इन्सान अपने होंटो को हरकत न दे तो आवाज़ नहीं निकलेगी। हाथों और उंगलियों को हरकत न दे तो किसी चीज़ को पकड़ नहीं सकता। इन्सान काग़ज़ क़लम व स्याही और ऊंचे–ऊंचे विचारों के दिमाग़ में आने के बावजूद काग़ज़ पर उनको उतार नहीं सकता कि दूसरे उन श्रेष्ठ विचारों से लाभान्वित हो सकें अगर उंगलियां हरकत न करें।

हां अपनी पूरी कुदरत और पूरे अख़्तियार को ज़ाहिर करने के लिये वो कुछ नमूने ऐसे भी इन्सानों के सामने पेश करता है जिससे ये मालूम हो जाये कि वो माध्यम के बग़ैर भी सब कुछ कर सकता है। मगर इस दुनिया के लिये उसने ये नियम नहीं बनाया।

जैसे मरियम अलै0 के पेट से हज़रत ईसा अलै0 की पैदाइश। बिनमौसम ताज़ा फलों और खजूरों का मिलना। आग का हज़रत इब्राहीम अलै0 के लिये गुलज़ार हो जाना। मूसा अलै0 की लाठी का अज़दहा बनकर फ़िरऔन के जादूगरों के सांपो को निगल जाना। बनी इस्राईल को दरिया पार करा देना फ़िरऔन और फ़िरऔन के लश्कर के लश्कर को डुबो देना।

जब ये वास्तविकता है कि ये दारुलअसबाब (माध्यम स्थली) है। यहां इन्सान की मेहनत और कोशिश के नतीजे ही सामने आयेंगे तो फिर ये ज़रूरी है कि हम अपनी योग्यताओं और क्षमताओं को काम में लायें और उसके मीठे फल खायें। इस समय भारत के मुसलमानों को बहुत सी समस्याओं और ख़तरों का सामना है। इन ख़तरों में सबसे नाजुक और विचारयोग्य पहलू ये है जिसमें अज्ञानतावश किसी ज़ाहिरी हंगामें के बग़ैर हमारी नयी नस्ल का दीन व ईमान ख़तरे में है। ये ख़तरा इन्जेकशन की सिरिंज की तरह हमारी नयी नस्ल से दीन व ईमान का ख़ून निकाल रहा है और हमारे अज्ञान व सादे बल्कि ज्ञानी लोगों को भी इसका एहसास नहीं, जोकि होना चाहिये। ये इतना ख़तरनाक पहलू है कि जिसका आम तौर पर लोगों को अन्दाज़ा नहीं है। हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था जो व्यवहारिक मूल्यों और मानव प्रेम के नियमों को मुतज़लज़िल कर देने के साथ–साथ हमारे दीन व अक़ीदे पर भी तीसा चला रही हैं। इस व्यवस्था को बदल देना हमारे बस में नहीं। जिसके अलग–अलग कारण हैं उनको बयान करने का ये अवसर नहीं। जो हम कर सकते हैं वो ये कि अपने इन बच्चों के लिये, अपनी नौजवान नस्ल के लिये जो स्कूलों और कॉलिजों में पढ़ रहे हैं उसकी दीनी शिक्षा की अलग से कुछ व्यवस्था करें। जिस ज़बान पर इस्लामी मूल्यों व नियमों के जानने व समझने का आधार है यानि उर्दू और कुरआन करीम की शिक्षा। हमारी नयी नस्ल इस बाहरी व निजी व्यवस्था के बिना स्कूलों व कालिजों में पढ़ रही है। वो ऐसे शब्द व इस्तलाह प्रयोग करती है जो इस्लामी और ईमानी मांगों के विपरीत हैं। स्कूलों और कॉलिजों की शिक्षा भी आवश्यक है हमें इस दुनिया की दूसरी समस्याओं को हल करने के लिये। मगर उसके साथ ये भी ज़रूरी है कि निजी तौर पर उर्दू और दीनी शिक्षा की ऐसी व्यवस्थाक करें जिससे हमारी नयी नस्ल ईमान के नूर व इस्लामी अक़ीदे से जो इसकी अस्ल पूंजी है उससे वंचित न होने पाये।

आज़ादी के बाद परवान चढ़ने वाली हमारी नयी नस्ल का विशषतयः जो स्कूलों और कॉलिजो और यूनिवर्सिटयों में शिक्षा पा रही है और उसकी बाहरी व घरेलू शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की गयी। दीन व ईमान से उसका रिश्ता इतना कमज़ोर है और कितने मुश्रिकाना शब्दों का वो प्रयोग करती है, अगर इसका निरीक्षण किया जाये तो पता चलेगा कि हमने अपने क़ौम के नौनिहालों को दहरियत, बेदीनी व मौक़ा परस्ती के मुंह में डाल दिया है। मगर हम इतने बेबस हैं कि इस सूरते हाल से चौंक नहीं

रहे हैं इसलिये कि हम अस्ल में रोटी दाल के मसले में ज़्यादा पड़े हैं और होना भी चाहिये हम इसका इनकार नहीं करते लेकिन दीन व ईमान के बारे में इससे बेहिसी और पेट के मामले में इतनी हिस को ख़ुदा के अज़ाब की संज्ञा दे तो शायद किसी भी ईमानवाले के निकट ये संज्ञा ग़लत न होगी।

कोई हमारी जानों पर हमला करे। हमारे परिवार व माल को जान का ख़तरा हो तो हम चीख़ पड़ेंगे और चीख़ रहे हैं लेकिन हमारी अस्ल पूंजी बड़ी चालाकी से और बड़ी मक्कारी के साथ हमसे बेहिचक छीना जा रहा है। इसका हमें वो एहसास नहीं जो होना चाहिये। अगर कुछ है तो बस इतना कि कुछ लिख और बोल दे शासन से विरोध कर दें। इसके साथ–साथ हमें अमलन क्या क़दम उठाना चाहिये और निजी तौर क्या इन्तिज़ाम करना चाहिये। उसकी तरफ़ से ग़ाफ़िल हैं। हम ऊपर बता चुके हैं कि ये माध्यम स्थली है। यहां कामयाबी के लिये ख़ुदा पर भरोसे के साथ–साथ माध्यम अपनाना और अपना प्रयास करना आवश्यक है। अपने तौर पर कुछ किये बग़ैर क्या हम केवल शिकवा–शिकायत से समस्या का समाधान कर सकते हैं और अपनी नयी नस्ल के दीन व ईमान की सुरक्षा कर सकते हैं। इस समय हमारी नयी नस्ल में जो थोड़ी सी चमक बाक़ी है इसका कारण ये है कि वो पिछली नस्लों से कुछ सुनती आ रही है जब ये पिछली नस्ल ख़त्म होगी और नयी नस्ल ही का दौर होगा तो उसके बाद आने वाली नस्ल शायद कलिमा–ए–शहादत से भी वंचित होगी।

भाषा का महत्व केवल इतना ही नहीं कि वो इसके बोलने और प्रयोग करने वालों के बीच एक प्रचलित और प्रिय माध्यम है बलिक उसका महत्व इसके प्रयोग करने वालों के मस्तिष्कों और रूझानों पर प्रभावशाली हो है। इसको स्पष्ट करने के लिये हम यहां मौलाना राबे हसनी नदवी के कुछ शब्द नक़ल कर रहे हैं:

"भाषा के शब्द व वाक्य, मुहावरे, शिक्षांए व विचार अपना–अपना विशेष प्रभाव रखते हैं और उनका सुनना छोटे स्तर पर लगभग वही असर रखता है जो विभिन्न लोगों से मिलने पर होता है। जिस प्रकार मनुष्यों में विभिन्न हाल व विभिन्न प्रभाव के लोग होते हैं कि किसी से मिलने पर नेक इन्सान की झलक मिलती है और किसी से मिलने पर बदनियत इन्सान का साया महसूस होता है और किसी से मिलने पर काफ़िर की परछायीं नज़र आती है। यहीं बात भाषा के शब्दों और विचारों में भी मिलती है।" इबादत, पूजा और सुपीरियर सलाम और प्रणाम, अल्लाह, परमेश्वर और गाड के शब्द अलग–अलग प्रभाव रखते हैं। जबकि अर्थानुसार समान माने जाते हैं। इबादत के शब्द में कोई व्यक्ति नमाज़ के रूप में या इस्लामी तरीक़े की चर्चा करते हुए तसव्वुर में आता है। पूजा के शब्द से मन्दिर और मूर्ति का विचार आता है। सलाम के रूप में अस्सलाम अलैकुम कहते हुए किसी मुसलमान का ख़्याल आता है और प्रणाम के नाम पर कोई व्यक्ति हाथ जोड़कर अदब करता हुआ मालूम होता है जिसके संबंध में किसी ग़ैर मुस्लिम का ख़्याल आता है। ज़बान यू तो कहने को केवल ज़बान है लेकिन दरअस्ल वो पूरी सभ्यता है। वो व्यवहारिक व्यवस्था है। वो धर्म से केवल ज़बान की शिक्षा से किसी भी ज़हन को एक धर्म से दूसरे धर्म की ओर, एक सभ्यता से दूसरी सभ्यता की ओर हस्तान्तरित किया जा सकता है। भारतीय मुसलमान उर्दू छोड़ते हुए अफ़सोस है कि ये नहीं सोचते कि अपनी नस्लों को कहां से कहां भेजने जा रहे हैं।

उपरोक्त से ये बात अच्छी तरह साफ़ हो गयी कि सरकारी स्कूलों की शिक्षा हमारी नयी नस्ल को अनजाने में दीन–धर्म से बड़ी ख़ामोशी के साथ किस तरह दूर करती जा रही है। मगर हमको इसका एहसास वैसा नहीं जैसा होना चाहिये। दीनी तालीमी कौन्सिल जबकि इस बारे में बहुत फ़िक्रमन्द और प्रयासरत है मगर जो मकतब स्थापित हैं वो अपर्याप्त हैं और इस व्यवस्था को भरपूर जन सहयोग न प्राप्त होने के कारण इतने सफल बनाने के साधन नहीं प्राप्त हो पा रहे हैं जितना प्राप्त होना चाहिये। इसी के साथ–साथ हमारे जो नौजवान स्कूलों और कॉलिजो में पढ़ रहे हैं उनके लिये विशेष व्यवस्था जहां इन कालिजों के अलावा वो बाद के समय में कुरआन और उर्दू की शिक्षा दी जाये। दीनी अक़ीदों को पुख़्ता किया जाये, इसकी हमने कोई व्यवस्था नहीं की है। जिसका परिणाम ये है कि हमारे ये नौजवान ग़ैर इस्लामी शब्दों व इस्तलाह बोलते हैं और इस्तेमाल करते हैं और वो उर्दू लिख–पढ़ नहीं पाते। अतः कोई दीनी किताब व पत्रिका पढ़ने में अयोग्य हैं। ये स्थिति उनको दीन से बेगाना और दूर करती चली जा रही है। इस ख़तरे को हम दूसरे ख़तरों से ज़्यादा तबाह करने वाला समझते हैं वरना खुद हमारी नस्ल दीन की दुश्मन और इस्लामी मूल्यों की विरोधी हो जायेगी और इसका बोझ हमारी गर्दनों पर होगा। .....(शेष पेज 17 पर)

मुज़फ़्फ़रनगर दंगे आँखों देखा हाल

मुहम्मद अलमुल्लाह इस्लाही

कभी किसी की ज़बान से सुना था "दंगा तो अस्ल में फल होता है उसे पहले खाद, पानी और बीज दिया जाता है नफ़रत, साम्प्रदायिकता, अत्याचार व बरबरियत का।" इस कथन की सच्ची व्याख्या उस समय देखने को मिली जब हम पश्चिमी यूपी के मुज़फ़्फ़नगर क्षेत्र व उसके आस–पास हुए दंगों के बाद हालात का जायज़ा लेने के लिये वहां पहुंचे। भारी पुलिस व अर्धसैनिक बलों ने शांति स्थापना की दुहाई देकर हमें उन इलाक़ो में जाने तो नहीं दिया जहां ये वारदातें अन्जाम दी गयीं थीं। किन्तु हमने पीड़ितों पर हुए अत्याचार की कहानी सुनने और वाक़्ये की हक़ीक़त की तलाश के लिये कैम्पों के बेसहारा व तंगी में जीवन व्यतीत कर रहे प्रभावितों से मुलाक़ात की।

उत्तर प्रदेश राज्य के ज़िला कांधला, शामली और बाग़पत जैसे ज़िलों में विभिन्न मदरसों, स्कूलों, ईदगाहों व घरों में निवासी साठ हज़ार से भी अधिक मुहाजिरीन (विस्थापित) की अलग–अलग दास्तान और अलग–अलग वाक़्ये थे जिन्हें सुनते हुए हमारे दिल लरज़ रहे थे तो लिखते हुए भी हाथ कांप रहे हैं। इनके अतिरिक्त वो हज़ारों लोग आस–पास के अपने रिश्तेदारों के यहां चले गये थे। पचासों हज़ार से भी अधिक अपनी सम्पत्तियां, घर, जानवर व सामान खो देने वाले मुहाजिरीन (विस्थापित) के चेहरों से भय व दहशत साफ़ नज़र आ रही थी। कोई अपने बेटे को खो चुका तो किसी की बेटी ग़ायब है। कोई औरत अपने पति की हत्या की दास्तान सुनाते–सुनाते आसुओं को नहीं रोक पा रही है तो कोई बूढ़ा बाप अपने जवान बेटे को कांधा देने की दिल चीर देने वाली कहानी बयान करते–करते रो पड़ता है। किसी का सबकुछ लुट गया है, किसी के घर को आग लगा दी गयी है तो किसी के नवजात शिशु को छीनकर उसके सामने ही मार दिया गया है। किसी की मां ज़ख़्मी है तो किसी का भाई हमेशा के लिये पांव से अपंग हो गया है। कितने ऐसे भी हैं जिन्होंने अपनी जवान बेटियों को खो दिया है या उन्हें बलवाई अग़वा कर ले गये हैं।

मदरसा इस्लामिया सुलेमानिया, कांधला (कैम्प)

सबसे पहले हम मदरसा इस्लामिया सलुमानिया, कांधला स्थित कैम्प में पहुंचे जिसके ज़िम्मेदार पूरे मन से शरणार्थियों की सेवा कर रहे हैं। यहां लगभग साढ़े सात हज़ार मुहाजिरीन (विस्थापित) रह रहे होंगे। इस कैम्प में अधिकतर लसाड़ गांव, निसार गंज, फगुना, धोबियान जैसे देहाती क्षेत्रों के लोग थे। इस कैम्प के देख–रेख और दूसरी ज़िम्मेदारियां अन्जाम देने वाले मौलाना नूरुलहसन राशिद का कहना था, "पूरे क्षेत्र में एक अनुमानित आंकड़े के अनुसार साठ हज़ार से भी अधिक मुहाजिरीन (विस्थापित) इस प्रकार के कैम्पों में हैं। मरने वालों की संख्यां शासनानुसार 48 है। फिर भी ग़ैर शासन की सूचना के अनुसार ये सूचना दो सौ से कम नहीं है। कई परिवारों के तो पांच–पांच और कई के दस–दस लोगों को बलवाइयों ने या तो क़त्ल कर दिया या ज़िन्दा जला दिया है। बीस से अधिक लड़कियां ग़ायब हैं। लोगों के अन्दर भय व निराशा के भाव इतने अधिक हैं कि वो पुलिस और फ़ोर्स की मौजूदगी में भी अपने घर वापिस नहीं जाना चाह रहे हैं। बहुत से मुस्लिम नौजवानों को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया है। घर व मस्जिदें तोड़ दी गयी हैं और लाश व दूसरे सबूतों को मिटाने के लिये उसकी राख तक को नदी में बहा दिया गया है। मकान जिस प्रकार से गिराये गये हैं उससे ऐसा नहीं लगता कि ये सबकुछ अचानक हो गया बल्कि एक पूरी साज़िश इसके पीछे कार्यरत नज़र आती है। दंगाइयों ने धमाका करने वाली चीज़ों के अतिरिक्त कुछ विशेष प्रकार के केमिकल भी प्रयोग किये हैं। गौरतलब बात ये है कि ये वो इलाक़े हैं जहां कभी भी इस प्रकार की वारदातें नहीं हुईं यहां तक कि उस समय भी नहीं जब भारत बंटवारे के बाद पूरा देश ख़ाक व ख़ून में

डूबा हुआ था।"

यहां गोका मिल्ली संस्था की ओर से हेल्थ सेन्टर और खाना और दूसरी जीवन यापन सामग्री उपलब्ध करायी गयी है। लेकिन हालात बहुत अच्छे नहीं हैं। एक–एक कैम्प में हज़ारों औरतें एक साथ इसी तरह मर्दों के कैम्पों मे हज़ारों मर्द एक साथ सोने पर मजबूर हैं। छोटे–छोटे बच्चे जिनकी उम्र खेलने और स्कूल जाने की है विस्थापन का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यहां पर हमने विभिन्न प्रभावितों से मुलाक़ात जिन्होंने उन घटनाओं को अपनी आंखों से देखा था। निसारगंज के तीस वर्ष के मुहम्मद तैय्यब कहते हैं, "सात सितम्बर को कवाल में पंचायत हुई इसी के बाद हालात ख़राब हो गये, सबसे पहले गांव के ही अन्सारी लड़के को जाट लड़कों ने मारा। कई जगह इसी प्रकार की शिकायत सुनने को आ रही थीं और लोग घरों को छोड़कर जाने लगे थे। हमने भी लड़कियों और औरतों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाना शुरू कर दिया लेकिन रास्ते में जाटों के खेत में से चार सौ से भी अधिक हिन्दु एकत्र हो गये और उन्होंने हमें जाने नहीं दिया। किसी तरह हम लोग फ़ोर्स की मदद से बाहर निकलने में सफल हुए लेकिन हमारी बहुत सारी औरतें और लड़के छूट गये और वो ग़ायब हैं जिनका कोई अता–पता नहीं।"

इसी गांव के एक और प्रभावित पच्चीस वर्ष के मुहम्मद ख़ालिद का कहना था, "हम सबसे बाद में आये। अलग–अलग साम्प्रदायिक तत्वों की ओर से सीडी के बंटवारे के बाद जिसमें कुछ लोगों को खुले तौर पर दिखाया गया था कि मुसलमान हिन्दुओं को मार रहे हैं। इनका मतलब यही था कि हमारे लोग जो है उनका बदला लिया जाये। सबसे पहले हमारे मकान में आग लगायी गयी। आग लगाने वालों के हाथों में पेट्रोल और घातक हथियार थे। वो ढ़ोल और बाजे के साथ आते थे। आगे–आगे पुलिस थी लेकिन वो कुछ नहीं कर रही थी। हम लोगों ने गन्ने के खेत में छिपकर किसी तरह अपनी जान बचायी।"

इस कैम्प के निवासी चालिस वर्ष के लिसाड़ गांव के सितारा गांव के मस्जिद के इमाम जमील अहमद का कहना था, "हमारे गांव में क़रीब तीन सौ मुसलमान घराने हैं, कोई भी नौकरी वाला नहीं है। जिस समय वारदात हुई मैं जान बचाकर भाग रहा था। मेरे सामने मेरे चचा को क़त्ल कर दिया गया था। इतवार का दिन था, हमारे चचा, जिनका नाम सुख्खन था को उन्होंने गंडासे से मार दिया। हमलावरों के पास तलवार, गंडासा, बन्दूक़ और राइफ़लें थीं। उन्होंने मस्जिद को भी आग लगा दी, जिसमें सारे क़ुरआन और दूसरी चीज़ें जलकर राख हो गयी। मैंने खेतों में घुसकर जान बचायी और नदी पार करके कांधला पहुंचा।" चौवालिस वर्ष के फगुना गांव के मुहम्मद सलीम मुहल्ला छोटी मस्जिद धोबियान का कहना था, "आठ सितम्बर की सुबह को जाट आये, जो भाग सके वो भागे, औरतों को उन्होंने ज़ख़्मी किया, कई को मार डाला। उमर अली हाजी की मां और उनके लड़के व भाई को बुरी तरह से चाकू मारकर ज़ख़्मी कर दिया। आस मुहम्मद नाम के एक नौजवान को क़त्ल कर दिया गया। इसकी वो रिकार्डिंग भी हमारे पास है जब वो डाक्टर व दूसरे अधिकारियों को रो–रो कर बता रहा है कि किसी तरह से हाथ–पांव को काट दिया गया। इन सारे मामलो की सूचना के लिये जब हमने एस एच ओ को फ़ोन किया तो उन्होंने फ़ोन काट दिया गया। मेरे सामने दो लोगों को क़त्ल कर दिया गया लेकिन मैं कुछ भी नहीं कर सका, इसलिये कि वो पूरी तरह हथियारों से लैस थे।"

मदरसा इस्लामिया रफ़ीक़िया रियाज़ुलउलूम जोगिया खेड़ा

इस कैम्प में भी लगभग पांच हज़ार व्यक्ति निवासी हैं। यहां अधिकतर फगुना, हटरद, खेड़ा, सतान, शदुनावली, टिकरी, डूनगर इत्यादि गांव के व्यक्ति थे। लोगों के अनुसार शासन के ज़िम्मेदारों ने ये यक़ीन दिलाया था कि उनके खाने–पीने, रहने–सहने और हर प्रकार की आवश्यकताओं की व्यवस्था की जायेगी लेकिन अब तक शासन की ओर से कोई क़दम नहीं उठाया गया है। अधिकतर लोग अनपढ़ व कम पढ़े–लिखे हैं इसीलिये अभी तक उन्होंने अपने ऊपर हुई हिंसा व बरबरता की रिपोर्ट भी नहीं दर्ज करायी है। जब हम वहां पहुंचे तो लोगों की भीड़ एकत्र हो गयी और हर एक अपनी दास्तान सुनाने के लिये बेताब हो गया। इस कैम्प में अस्सी साल के बुज़ुर्ग से लेकर पन्द्रह दिन के छोटे–छोटे मासूम बच्चे भी थे। इस कैम्प की निवासिनी फगुना गांव की एक औरत पैंतीस वर्ष की फ़ातिमा का कहना है, "बलवाइयों ने उन्हें नंगा करके इज़्ज़त लूटने की कोशिश की, वो नग्न हालत में भागकर पुलिस स्टेशन आयी, जहां उन्हें कपड़ा दिया

गया और कैम्प में भेज दिया गया। जल्दी में और जान बचाने की कोशिश में उनकी तीन साल की भतीजी भी छूट गयी जिसका कोई अता–पता नहीं है। दंगाई जय श्रीराम के नारे लगाते हुए और ढोल बजाते हुए हमले के लिये आये थे, उन लोगों ने हमारे कितने लोगों को मारा कुछ पता नहीं।”

फगुना के हाजी मान अली वल्द फ़तेह दीन (55 वर्ष) का कहना था, “कई दिन पहले मोदी के बड़े–बड़े पोस्टर लगाये गये थे। गांव के प्रधान ने हमें आश्वस्त कराया था कि हमारे साथ कुछ नहीं होगा। प्रधान ये कह कर गया था कि आज के दिन नौजवानों में ज़रा आक्रोश है तो अगर कुछ कह दें तो उसका जवाब न दें। हम लोगों ने भी यही सोचा कि कुछ नहीं कहेंगे लेकिन थोड़ी ही देर बाद उन्होंने हमला कर दिया। वो बल्लम और तलवार लिये हुए थे। उन्होंने मेरे लड़के को गंडासे से मारकर ज़ख़्मी कर दिया। इस्लाम नाम के एक सत्तर साल के बुज़ुर्ग को मेरे सामने मार डाला। हम अपनी जान बचाने के लिये घरों की छतों पर चढ़ गये और वहां ईंटे भी इकट्ठा कर लीं। हमने सोच लिया था कि वो अगर हमारी ओर आने का प्रयास करेंगे तो हम उन्हीं ईंटो से हमला करेंगे। बच्चों को हमने हौसला दिया था कि डरें नहीं हम भी मुक़ाबला कर सकते हैं। और सचमुच जब उन्हें अन्दाज़ा हो गया कि हम भी कुछ कर सकते हैं तो वो भाग खड़े हुए। इसके बाद हमने थाने में फ़ोन किया लेकिन फ़ोन रिसीव नहीं किया गया। शाम को सात घन्टे बाद पुलिस आयी और फिर हमें छत से जहां तीन सौ लोग एकत्र थे हमें यहां भेज दिया गया। अब हमारे घरों को जला दिया गया है। वो भैंस और जानवर खोल ले गये। कुछ नहीं बचा हम लुट गये।”

इसी गांव के तीस साल के गुलफ़ाम का कहना था, “हम हिम्मत करके चार दिन बाद अपनी भैंसों को लाने गये और छः भैंसों को लाने में सफल हुए। उन लोगों ने हमारे बहुत सारे जानवर चुरा लिये। गांव में एक बड़ा मदरसा था। उसको भी पूरी तरह से लूट लिया। उसमें निमार्ण कार्य भी चल रहा था। बहुत सी रक़म थी वो सब लूट कर ले गये। मस्जिदों में भगवा झन्डे गाड़ दिये गये। पता चला कि हमारे बहुत से जानवर वो काट कर खा गये और भी लोगों के जानवर वहां बंधे हुए थे। कई दिनो से उन्हें चारा पानी नहीं दिया गया है। वो ऐसे ही वहां बंधे पड़े हैं। अगर [illegible] बछड़े और मायें तो मर चुकी हैं।”

शेष : लम्हों ने ख़ता की–सदियों ने सज़ा पायी

अतः हमको इसकी बहुत जल्द फ़िक्र करनी चाहिये और इसके लिये हर मुमकिन माध्यम अपनाना चाहिये। हमने शुरू में कहा था कि ये असबाब (माध्यम) की जगह है। माध्यम अपनायें जायेंगे तभी उसके परिणाम सामने आ सकते हैं। इतिहास में इसकी अनगिनत मिसालें हैं जिनकी व्याख्या का ये मौक़ा नहीं है। इतिहास का अध्ययन बताता है कि “लम्हों ने ख़ता की सदियों ने सज़ा पायी”

थोड़ी सी ग़फ़लत व कोताही ने मुसलमान उम्मत को इज़्ज़त व सरबुलन्दी के मक़ाम से गिरा दिया है। सारांश के तौर पर ये आयत–ए–करीमा पढ़ें और ग़ौर करें:

“ऐ ईमान वालों! तुम अपने को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाओ।” और “और इस्लाम के अलावा किसी और हालत पर जान मत दो।”

शेष : इमाम अबू हनीफ़ा रह0 की शान

7. इमाम अहले बल्ख़ हज़रत ख़ल्फ़ बिन अय्यूब फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला से इल्म आप स0अ0 को मिला, आप स0अ0 के बाद सहाबा को, सहाबा के बाद ताबईन को, फिर ताबईन से इमाम अबूहनीफ़ा को मिला, इस पर चाहे कोई ख़ुश हो या नाराज़।

8. मुहद्दिस कबीर अब्दुल्लाह बिन दाऊद फ़रमाते हैं कि अबू हनीफ़ा रह0 की ऐब गोई दो आदमियों में से एक के सिवा कोई नहीं कर सकता। या तो जाहिल शख़्स, जो आपकी बात का दर्जा नहीं जानता या हासिद जो आपके इल्म से वाक़िफ़ न होने की वजह से हसद करता है।

9. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 फ़रमाते हैं कि अगर अल्लाह तआला मुझे इमाम अबू हनीफ़ा रह0 और सुफ़ियान सूरी रह0 से न मिलाते तो मैं बिदअती हो जाता।

10. इमाम ज़हबी रह0 हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा रह0 का तज़किरा इस तरह फ़रमाते हैं: “इमाम अबू हनीफ़ा इमामे आज़म हैं, इराक़ के फ़क़ीह हैं, वो परहेज़गार आलिम बा अमल, इन्तहाई इबादत गुज़ार और बड़ी शान वाले हैं।”

इमाम अबू हनीफ़ा रह0 की शान में ये कुछ कथन नक़ल किये गये हैं कि इमाम साहब की ज़ात और सिफ़ात और फ़िक्र से जुड़ी हुई आपकी बुज़ुर्गी और अज़मत व फ़ज़ीलत से जुड़ी हुई बहुत सी किताबे मौजूद हैं।

अवैध संबंध की बर्बादियां

मुफ़्ती मुहम्मद ज़करिया क़ासमी

मानवीय काया की बड़ी हैसियत है। हर–हर अंग के पैदा करने का उद्देश्य अलग–अलग है। उनमें दिल की हैसियत बदन के सुल्तान की है। जिसकी ज़िम्मेदारी और मक़सद चीज़ों को परखना और मुहब्बत या नफ़रत करना है। इस आज़ाद दुनिया में जहां ना नेकी की हद निश्चित है और न बुराई की हद निश्चित है। जहां पाकदामनी के नमूने भी हैं और जहां अश्लीलता व नग्नता के प्रदर्शन भी हैं। इस आज़ाद दुनिया में आज़ाद ख़्याली और औरतों की आज़ादी जैसे फ़रेब से भरे हुए ज़ाहिरी, खुशनुमा नारो की बड़ी गूंज है और उनके परिणामों से सब अनभिज्ञ हैं। मर्द–औरत दुनिया की ज़िन्दगी गुज़ारने में आज़ाद हो चुके। इज़्ज़त व अस्मत की चादरें तार–तार हो चुकी हैं। हया भी शरमा चुकी है। मानवता व स्त्रीत्व की बुलन्द इमारतें ढ़ेर हो चुकी हैं। निकाह होने से पहले ही खुला व तलाक़ की आवाज़ें कानों से टकरा रही हैं। पाक दामन ज़मीर पानी–पानी हो चुका है। समाज के नौजवान लड़के व लड़कियां नाजाएज़ संबंधों में पड़ चुके हैं। अंधे इश्क़ में शादी शुदा व कुंवारे पन का भी ख़्याल भुला दिया गया। ख़ानदान की शराफ़त दाग़दार हो गयी। क़ौम व समाज का पास व लिहाज़ ख़त्म हो गया। बल्कि मज़हब व मिल्लत से एक क़दम आगे बढ़कर इश्क़ की आग ने दीन व ईमान को भी झुलसा दिया। एक ज़िन्दा ज़मीर वाला मुसलमान मुस्लिम समाज का सरंगो हो गया। बहनोई के साली के साथ या बीवी का किसी दूसरे के शौहर के साथ या आज़ादाना एक दूसरे के साथ नाजाएज़ संबंध हद से बढ़ चुके हैं। अगर ग़ौर से गहराई के साथ समाज का निरीक्षण करें और कारणों की खोज करें तो कुछ साफ़–साफ़ सच्चाइयां सामने आयेंगी जिनसे इनकार की गुंजाइश नहीं है।

1. मिश्रित शिक्षा व्यवस्था (Co-education): आज़ादी के बाद से उन्नति के लिये अंग्रेज़ी व सामाजिक शिक्षा का सहारा लिया जाने लगा जो एक ओर तो टेक्नालॉजी और साइंस पर आधारित और दूसरी ओर मानवता के निर्माण से बिल्कुल ख़ाली है। जिसमें सामाजिक व्यवहारिक मूल्यों को नज़रअन्दाज़ किया गया। जो समाज व सोसाइटी में इन्सानियत के बीच जीवन यापन के नियमों से हटकर है "करेला नीम चढ़ा" ऐसी शिक्षा को मिश्रित व्यवस्था के साथ जोड़ा गया। लड़के और लड़कियां एक स्कूल, एक कॉलिज में एक छत के नीचे शिक्षा पायें। एक ही बस में सवार होकर कॉलिज पहुंचे। इन्सान ही नहीं बल्कि हर नर व नारी और हर नारी व नर के बीच एक आकर्षण होता है जो निकाह के ज़रिये ज़ायज़ तरीक़े से हासिल किया जाता है। शरीअत ने हलाल व पाक रास्ता अता किया है जिससे ज़िन्दगी पाकीज़ा बनती हैं। मिश्रित शिक्षा व्यवस्था से बेहयाई व अश्लीलता को बढ़ावा मिल रहा है। नौजवानों में आवारगी, बेहयापन खुल्लमखुल्ला पाया जा रहा है। ऐसे ही कॉलिज पूरी आज़ादी मिली है, जहां के कैम्पस हॉस्टल स्वतन्त्र वातावरण में रंगे हुए हैं फिर क्यों न ज़िनाकारी और बदकारी फैलेगी और मुस्लिम लड़कियां दूसरों से शादियां रचांएगी। उनके साथ छेड़छाड़ क्यों न हो। ये मिश्रित शिक्षा यूरोप की देन है। जैसे यूरोप का माहौल नंगा हो चुका है वैसे ही इस मिश्रित शिक्षा व्यवस्था से मुस्लिम समाज की लड़कियां व्यवहारिक मूल्यों, शर्म व हया को बाला–ए–ताक़ रख कर नंगी हो रही हैं और नाजायज़ रिश्तों की ज़िन्दगी गुज़ार रही हैं।

2. कम्पनियों में नौकरियां: एक क़दम आगे बढ़कर शिक्षित लड़कियां जो कुकिंग का ज्ञान नहीं रखतीं। रोज़ा

नमाज की पाबन्दी एक रस्मी तौर पर शादी विज्ञापन की पहचान बन चुकी हैं। घरेलू ज़िन्दगियों से बेज़ार होती हैं। जिनके माता–पिता आज़ाद ख़्याल, पाश्चायत सभ्यता के हामी होते हैं। अपने हाथों से हया की चादर को उतार कर बाज़ार में नीलामी के लिये कम्पनियों को भेजते हैं। लड़कियां और औरतें माल की लालच में नौकरी शुरू करती हैं। धीरे–धीरे किसी के फ़रेब के दामन में फ़सती हैं। कभी कम्पनी के मैनेजर के, कभी कम्पनी के बास के या फिर अपने साथी कर्मचारी के साथ इश्क़ होता है। जिनके नाजाएज़ संबंधों से माता–पिता बिल्कुल अनजान होते हैं और लड़कियां अपनी ज़ाहिरी मासूमियत से माता–पिता के दिल को बहलाये रहती हैं। कुछ जगह तो मांए इस इश्क़ को सपोर्ट करती हैं या खुद किसी दूसरे के साथ अफ़ेयर में पड़ी होती हैं, जिसकी वजह से खुले मुंह रोक नहीं सकतीं। ग़रीब पिता या पति सऊदी में कोल्हू के बैल की तरह मेहनत में लगा रहता है। लड़कियों की नौकरी एक महत्वपूर्ण कारण है नाजायज़ संबंधों का। काल सेन्टर के नाम पर, मल्टी नेशनल कम्पनियों के नाम पर औरतों की इज़्ज़त व अस्मत पर डाका बातिल की एक गहरी साज़िश का हिस्सा है। कुछ रुपये पैसे तो हाथ आ जायेंगे लेकिन ज़िन्दगी व समाज की वास्तविकता और रूह ख़त्म हो जायेगी।

3. आज़ाद माहौलः इन्ही उप्रोक्त कारणों के आधार पर समाज और हर शहर में एक प्रकार का स्वतन्त्र वातावरण अस्तित्व में आ रहा है। हर कोई अपने दिल की दुनिया में मगन है और उसी को खुशी का, राहत का सामान समझ रहे हैं। हालांकि ये मर्द–औरत का आज़ाद मेल–मिलाप और आज़ाद माहौल अल्लाह के किसी अज़ाब का ज़रिया बनेगा।

4. निकाह में देरीः इन्हीं कारणों में से एक कारण निकाह में देरी भी है। क्योंकि निकाह ज़रिया है हलाल व जायज़ तरीक़े से इच्छाओं की पूर्ति का। जब इसमें देर की जाये और अश्लीलता व नग्नता जैसे गुनाह का माहौल घर–घर, दर–दर हो तो लाज़मी तौर पर हराम दरवाज़े और चोर रास्ते अपनाये जायेंगे। इज़्ज़त व अस्मत की हिफ़ाज़त, ग़लत काम व बदकारी, नाजायज़ इश्क़बाज़ी के ख़ात्मे का रास्ता जल्द निकाह है। जैसा कि हदीस में है कि तीन चीज़ों में देर न करो। उनमें से एक जब लड़की बालिग़ हो जाये और उसके जोड़ का लड़का मिल जाये तो उसका निकाह कर दिया जाये। आज जबकि दुनिया की अनावश्यक शिक्षा के लिये, रिश्तों का पीठ पीछे डाल दिया जाता है या ऊंचे से ऊंचे स्तर की तलाश में लड़कियों और लड़कों की उम्रें बढ़ती जा रही हैं जो यक़ीनन बेराह रवी का ज़रिया का ज़रिया बनती हैं।

5. सेलफ़ोन का इस्तेमालः एक अहम कारण सेलफ़ोन का अधिकता से प्रयोग किया जाना है और वो ज़माने की आवश्यकता है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता। मगर इसका इस्तेमाल ज़्यादातर अश्लील संदेश भेजने या नाजायज़ इश्क़ में भी इस्तेमाल का एक ज़रिया बन चुका है। ख़ासकर लड़कियों के सेलफ़ोन पर रोक लगाने की ज़रूरत है या उनकी पूरी निगेहबानी की जाये कि फ़ोन किस काम में इस्तेमाल हो रहा है। इसको सही रुख़ पर लगाने की कोशिश की जाये।

संक्षेप में ये कि ये कारण हैं जिन पर ग़ौर करके बारीकबीनी से हालात का जायज़ा लें। यही कारण हैं जिनपर सारी चक्की घूमती हुई नज़र आ रही है। अगर इनकी समाप्ति की जाये तो संभव है कि हालात क़ाबू में आ जायें और ये फ़ित्ना ख़त्म हो सके।

वो औरत जन्नत में नहीं जायेगी

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल स०अ० फ़लां औरत का ख़ूब नमाज़ पढ़ने, रोज़ा रखने और ख़ैरात करने की बहुत चर्चा है, लेकिन वो अपनी ज़बान से अपने पड़ोसियों को तकलीफ़ देती है। आप स०अ० ने फ़रमाया वो दोज़ख़ में होगी। उसने फिर कहा: ऐ अल्लाह के रसूल फ़लां औरत का ज़िक्र कम नमाज़ पढ़ने, कम रोज़ा रखने, और कम ख़ैरात करने में किया जाता है (यानि सिर्फ़ फ़र्ज़ अदा करने की हद तक) वो पनीर के टुकड़ों से सदक़ा करती है लेकिन अपनी ज़बान से अपने पड़ोसियों को तकलीफ़ नहीं पहुंचाती। आप स०अ० ने फ़रमाया। वो जन्नत में जायेगी। (बैहिक़ी)

आत्महत्या

इस्लामिक दृष्टिकोण से

वर्तमान समय मे विभिन्न लोग यूनियन और संस्थाओं की ओर से अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने और टीका टिप्पणी करने के लिये जो मार्ग अपनाया जाता है उसे "भूख हड़ताल" कहते हैं। ये एक नियम बना है कि अगर आपकी बात न सुनी जा रही हो या आपकी इच्छानुसार कोई फ़ैसला नहीं दिया जा रहा हो (बग़ैर इसके कि आप हक़ पर हैं या नहीं) तो अपनी बात मनवाने या फ़ैसले को अपने हक़ में कराने के लिये इन्सान भूखा रह कर अपने को नाराज़ा दिखाता है और विरोध दर्ज कराता है। इसमें कभी–कभी उसकी जान तक चले जाने का ख़तरा रहता है। अतः इस्लामिक दृष्टिकोण से भूख हड़ताल बिल्कुल जायज़ नहीं क्योंकि जीवन की सुरक्षा के लिये और अपनी क्षमता बनाये रखने के लिये भोजन करना वाजिब है। अल्लामा सैय्यद मुहम्मद अबी सऊद फ़तेहुल अमीन में लिखते हैं:

"मौत से बचने के लिये खाना–पीना ज़रूरी है।"

"खाने के कुछ दर्जे हैं इतना खाना जिसके ज़रिये जान बच सके फ़र्ज़ है, लिहाज़ा अगर कोई खाना–पीना छोड़ दे यहां तक कि मर जाये तो गुनहगार होगा।"

एक दूसरी जगह लिखा है कि:

"अगर भूख लगे और कुदरत के बावजूद खाना न खाये यहां तक कि मर जाये तो वो व्यक्ति गुनहगार होगा।"

बड़े–बड़े फ़ुक़हा की उप्रोक्त व्याख्याओं से ये बात साबित हुई कि खाने पर कुदरत के बावजूद उसे न खाना यहां तक कि मौत हो जाये ये गुनाह और अज़ाब की वजह है। क्योंकि इसे एक क़िस्म की खुदकुशी कहा जाता है जबकि हदीसों में ख़ुदकुशी की सख़्त वईद आयी है और खुदकुशी करने वालो को जहन्नम वालों में क़रार दे दिया गया है, इसीलिये हुजूर स0अ0 का इरशाद है कि:

"जिसने किसी चीज़ के ज़रिये अपने आप को क़त्ल किया, उसी चीज़ से क़यामत के दिन से अज़ाब दिया जायेगा।"

एक दूसरी जगह इरशाद है कि:

"जो शख़्स किसी पहाड़ से गिरकर ख़ुदकुशी करेगा वो दोज़ख़ की आग में हमेशा–हमेशा के लिये गिरता रहेगा और जो शख़्स ज़हर पीकर खुदकुशी करेगा, वो हमेशा–हमेशा के लिये दोज़ख़ की आग में ज़हर पीता रहेगा और जिस शख़्स ने किसी हथियार से ख़ुदकुशी की वो दोज़ख़ की आग में हमेशा–हमेशा के लिये उसी हथियार से अज़ाब पायेगा।"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 से हुजूर अकरम स0अ0 ने फ़रमाया "कभी रोज़ा रखा करो और कभी इफ़्तार" इसी तरह "रात को नमाज़ पढ़ा भी करो और सोया भी करो" क्योंकि तुम्हारे बदन का भी तुम पर हक़ है, तुम्हारी आंखों का भी तुम पर हक़ है ये रात भर जागने से ख़राब हो जाती हैं।

फ़ुक़्हा फ़रमाते हैं कि:

"इतना कम खाकर मेहनत करना कि फ़र्ज़ अदा करने में परेशानी हो जायज़ नहीं।"

फ़तहुल अमीन में है कि:

"ऐसा कम खाना जायज़ नहीं इबादत की अदायगी न कर सके।"

लिहाज़ा अपना हक़ पाने और अपनी बात मनवाने के लिये "भूख हड़ताल" के बजाये विरोध का जायज़ तरीक़ा अपनाना चाहिये। अपने मुक़द्दमे को अदालत में या मुसलमानों के सालिसी किरदार के लिये पेश किया जाना चाहिये और शांतिपूर्ण ढ़ंग से अपना अधिकार प्राप्त करने के लिये संघर्ष किया जाना चाहिये।

स्वयं का निरीक्षण

दुनिया जिस रास्ते पर चल रही है, चलने दीजिये, इसकी ज़िम्मेदारी यक़ीनन आप पर नहीं, लेकिन स्वयं आप किस रास्ते पर चल रहे हैं? इसकी ज़िम्मेदारी यक़ीनन आप पर है। आप अपने तौर–तरीक़ों से किस सभ्यता की नुमाइन्दगी कर रहे हैं?आप अपनी रोज़ाना की ज़िन्दगी से किस व्यवस्था को ताक़त पहुंचा रहे हैं?आपका दिल दूसरों की ख़िदमत करके ज़्यादा ख़ुश होता है या दूसरों से ख़िदमत लेकर?आपका वक़्त मस्जिदों में ज़्यादा ख़र्च होता है या पार्कों में?आपकी दिलचस्पी ख़ानक़ाहों में ज़्यादा होती है या बाज़ारों में?आपकी रातों के पिछले पहर, तहज्जुद और अपने रब की याद में बसर होते हैं या थियेटर से घर वापिस आने में?आपको मज़ा इसमें आता है कि आपके मुंह पर आपकी तारीफ़ और दूसरों के पीछे उनकी बुराई हो रही हो या उसके उल्टे की इसमें कि आपको कोताहियों और लापरवाहियों पर आपके सामने आपको बुरा कहा जा रहा हो और दूसरों की ख़ूबियों और फ़ज़ीलतों की दाद उनके पीछे दी जा रही हो?अपनी जगह पर सोचिये?और फ़ैसला कीजिये की आपकी ज़िन्दगी का रुख़ इन दो राहों में किस ओर है? कहीं ख़ुदा न करे वे सोचे समझे, आप उस संस्कृति, उस सभ्यता, जीवन बिताने की उस व्यवस्था को तो मदद नहीं पहुंचा रहे हैं जिसका परिणाम दूसरी दुनिया में नहीं, इसी दुनिया में तबाही, बर्बादी व रुस्वाई है?

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME-05

November 13

ISSUE-11

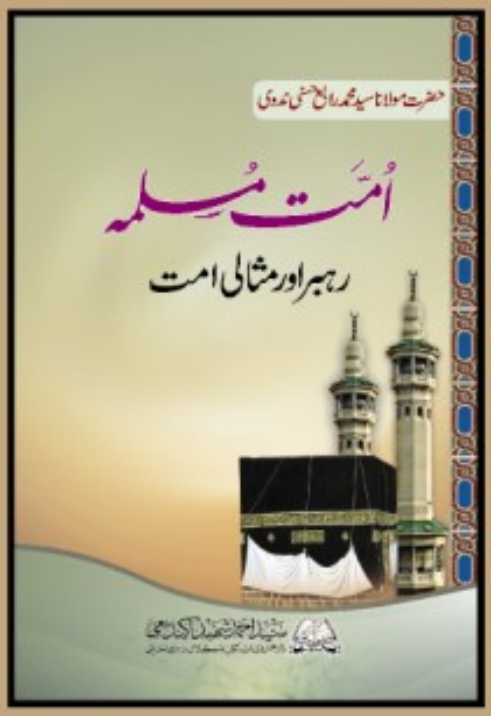

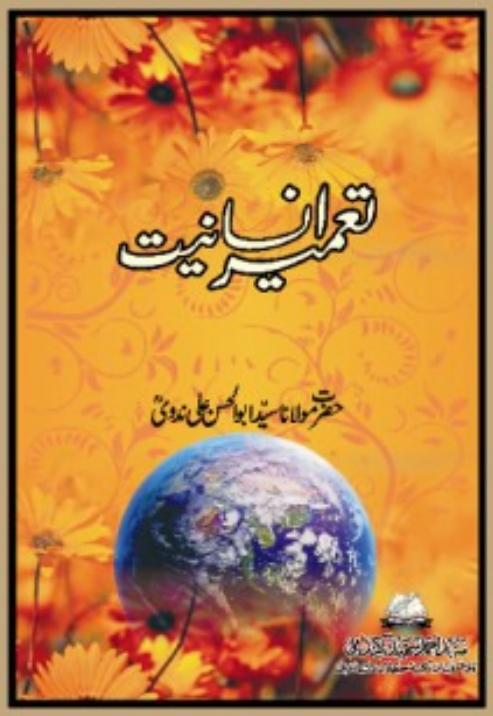

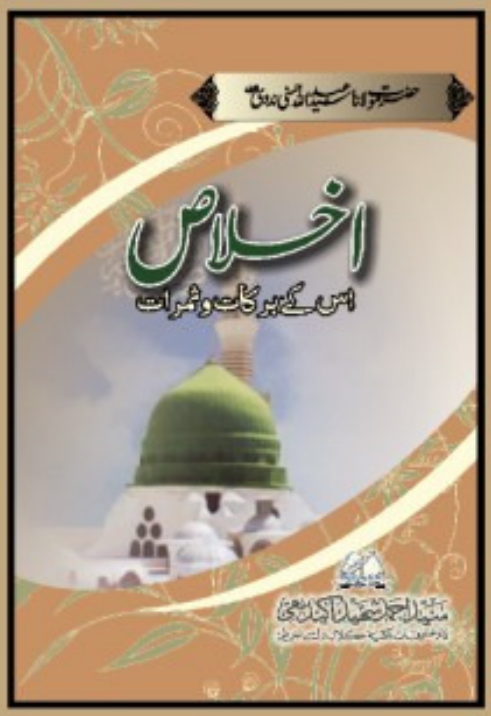

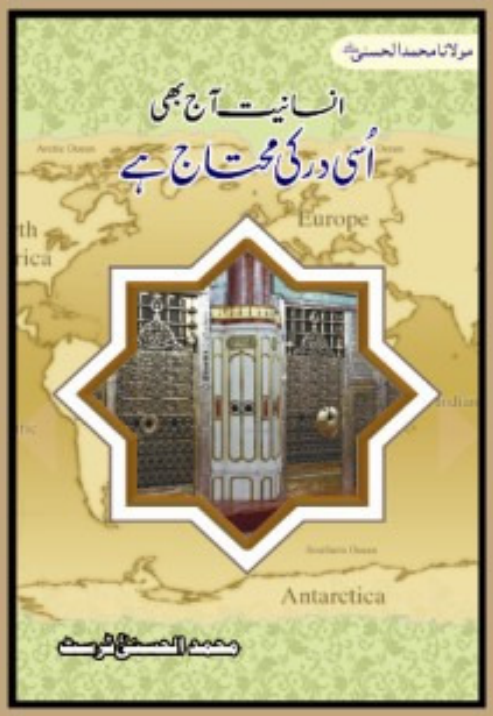

Sayyid Ahmad Shaheed Academy, Raebareli (Mob: 9918385097)

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile: 9918385097, 9918818558
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.